



गायेन जस देखेन

सियाराम मिश्र

नवनीत प्रकाशन

23 हीवेट रोड, इलाहाबाद

सस्करण

प्रथम, १९९४

काँपी राइट : सियाराम मिश्र

मूल्य : ५०-०० रुपया

प्रकाशक

नवनीत प्रकाशन

२३, हीक्ट रोड

इलाहाबाद

मुद्रक

बैशालिको प्रिन्टर्स

८८३/७ दरियाबाद, पुलिस चौकी

इलाहाबाद

GHAYN JASH DEKHAN

By : Shiyaram Mishra

Price : Fifty Rupees Only

१९९४



नवनीत प्रकाशन, २३ हिवेट रोड, इलाहाबाद

कवि की कलम से

मेरा जन्म गोलघा गोकर्ण नाथ के निकट ग्राम घरघनियाँ में मन् १९४२ ई० में हुआ था। यह अवधी भाषा का क्षेत्र है ! किन्तु यहाँ की अवधी पर कन्नौजी का कुछ प्रभाव परिलक्षित होता है। हमारे घरों में कन्नौजी मिश्रित अवधी बोली जाती है। काव्य-यात्रा में मुझे यह लगा कि अपनी बोली में जितनी सहज अभिव्यक्ति हो सकती है उतनी लड़ी बोली में नहीं। व्यक्ति को विशेष रूप से कवि को हृदय की बात कह लेने में सन्तोष का अनुभव होता है। मेरी यह मान्यता है, यदि व्यक्ति हृदय से सरल नहीं है, उसका बाहर भीतर एक नहीं है तो वह चाहे विद्वान, धनवान या नेता अधिकारी भले ही हो जाय किन्तु कवि नहीं हो सकता। सहज अभिव्यक्ति के लोभ में ही अवधी में कविताएँ लिखी हैं।

गाँव प्रदेश तथा देश की राजनीतिक, सामाजिक गतिविधियों ने कवि को प्रभावित किया। प्रत्येक क्षेत्र में जो कुछ भी देखा परखा उसे व्यक्त करने का टूटा-फूटा प्रयास ही यह संकलन है। विविध विषयों से युक्त, जब इस संकलन की पाण्डुलिपि तैयार हुई तो शीर्षक की तलाश हुई। सर्व प्रथम धर्मपत्नी श्रीमती विजय लक्ष्मी मिश्र के सामने चर्चा हुई तो उन्होंने साँचु कहइया दाढ़ी जार' शीर्षक रखने का सुझाव दिया। कुछ दिनों के उपरान्त अग्रज डॉ० मोहन अवस्थी से भेंट होने पर उन्होंने कहा यह शीर्षक साहित्यिक कविताओं को समाहित करने में असमर्थ है। अतः पर्याप्त मथन के पश्चात् "गायेन जस देखेन" को अन्तिम रूप दे दिया गया।

संकलन की पाण्डुलिपि अपने अग्रज डॉ० श्याम सुन्दर मिश्र को दिखाई, उन्होंने कहीं-कहीं पर कन्नौजी के प्रभाव पर आपत्ति की। पुनः अवलोकन किया गया और जहाँ तक संभव हो सका कन्नौजी से प्रभावित शब्दों को बदलने का प्रयास किया गया। फिर भी यदि कहीं पर कन्नौजी

शुक्ल का प्रभाव मेरी कविता पर कहीं-कहीं पसा है अतः कवि श्री शुक्ल का ऋणी है ।

मैंने अपनी सभी पुस्तकों की भूमिकाओं में यह स्वीकार किया है कि मैं कभी अध्ययनशील नहीं रहा और कविता के पास पड़ोस से भी निकल सका हूँ, इसमें सन्देह है। जो कुछ भी बन पड़ा है वह माँ का प्रसाद ही है। हाँ, यह बात अवश्य है कि मुझे कविता के व्याज श्री विष्णु कुमार त्रिपाठी 'राकेश' जैसे अग्रज तथा डॉ० आनन्द मंगल बाजपेयी जैसे विद्वान मित्र के रूप में प्राप्त हुये ।

श्रेष्ठेय डॉ० नामवर सिंह, डॉ० सूर्य प्रसाद जी दीक्षित, डॉ० उमा शंकर शुक्ल, डॉ० देवेन्द्र मिश्र, डॉ० डी० एस० मलिक, डॉ० मुन्नु लाल पुरवार के प्रोत्साहन ने भी मुझे विशेष बल प्रदान किया है। नगर के रोटरी क्लब तथा व्यापार मण्डल के पदाधिकारियों का भी कवि ऋणी है। साथ ही साहित्यानंद परिषद के साथियों विशेष कर सन्त कुमार बाजपेयी 'सन्त' श्री कान्त तिवारी 'कान्त' डॉ० के० वी० त्रिपाठी 'राही' के सहयोग का आभार मानता है ।

हिन्दो साहित्य सम्मेलन के प्रधान मंत्री आदरणीय श्रीधर जी शास्त्री, कविवर श्री राजेश दीक्षित ने भी मुझे विशेष रूप से प्रोत्साहित किया है, कवि उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता है। अन्त में स्मृति शेष पं० राजाराम मिश्र तथा बाबू अनन्त राम पुरवार के माग दर्शन ने मुझे जो सबल प्रदान किया कवि आभार व्यक्त करने की औपचारिकता से उनके योगदान को हल्का नहीं बनाना चाहता, मेरे परम मित्र स्व० श्री बालकृष्ण त्रिपाठी के पुत्रगण संगम प्रकाशन के स्वामी त्रिपाठी बन्धुओं का विशेष ऋण है, जिन्होंने पुस्तक को जन-जन तक पहुँचाने का दायित्व अपने ऊपर लिया ।

मैंने पूर्व में कहा है कि यह संकलन मन की अनुभूतियों का सहज चित्रण है, अतः 'किसी को कोई आघात लगे तो बालक की तोतली वाणी मानकर मात्र कविता का आनन्द लेते हुये कवि को क्षमा करेंगे। सर्वेभवंतु सुखिनः ।

जय मानव

सियाराम मिश्र

मंगला देवी मन्दिर गोला/गोकर्णनाथ
जनपद-खोरी(उ० प्र०) २६२८०२

अनुक्रम

छाँड़ि तुमहँ न सहारा कोई	९
उपजाऊ करि दै मुँह बदरा	११
हम कलाकार हन भारत कै	१२
धरम हई नेतन का हथियार	१४
अइसे मास्टर का नमस्कार	१५
चेतु रे भारत केर किसान	१६
यहै दुखन दुबरे हन	१७
अगिन का धाम	१८
भगवान देस चलाइ रहा	१९
धरम के खातिर तुम इन्सान बनौ	२१
देस के प्रानन मा उतरउ	२२
हम बसन्त के फूल बनी	२३
दिया टिमटिमाई लाग	२४
गणतंत्र पिआरो प्रानन ते	२५
सागर देखेन	२६
बूढ़े बिरिछ तुमहँ पहिचानेन	२७
बरखा	२८
चन्दा माया	२९
बोलावति हूँ	३१
बिन परिसर ज्ञानी उल्लू हइ	३२
दोहे	३४
का कभिहँ जिगई चनगा	३६
देगानवागे कइसे निभई	३७
चाल्ह भोज	३९
हिम कै बिटिया	४१
जब आंवा दीन देवारी कै	४२

अखण्ड रामाइनि	४४
आवा परधानी का चुनाव	४५
गाँवन के नेता	४८
गँवई गाँवन केर मंजूर	४९
कस्बा का रेक्शा वाला	५०
अन्न के किसान की दुनियाँ	५१
कारीगर	५२
हिन्दी के टीचर	५२
गाँवन के छैल चिकनियाँ	५३
जई मास्टर अंगरेजी क्ययार	५४
बिआई गाँव के लरिकी का	५५
तिलुली आई	५७
बरखा रानी	५८
तीसरि सारित गडुआ होई	६०
मोरा बनी	६२
शहरातू विद्यार्थी	६३
नई रोशनी के दस्तूर	६४
मरी चकबन्दी भई	६५
मुशायरा	६६
दोहे	६८
कुण्डलियाँ	७२
रोला	७३
कुण्डलियाँ	७३
रोला	७४
कुण्डलियाँ	७४
कवि सम्मेलन	७५
जइ ग्वाला सब इनते मात	७८
ओ ओटर भईया	७९
डाकुन की बनि आई	८०
देहाती बात	८१
दोहे	८३
गरीबी न पापर बेलइ	८४
नींद कहूँ कंकरीली जमीन पे	८५

यह त कबहूँ न लड़िअउ भूलि	८६
भुँइ माता	८८
जइ कृषी समर कै जोधा	८९
अइसे बना आधुनिक नेता	९१
मास्टर हुइगे	९४
फुलमतिया का दिन भरि काम	९६
कवि की कलम न अब लिखि पइहै	९८
लड़ै जाति से जाति	१००
उत्तर प्रदेश के जइ मन्दिर	१०१
चलैइ चप्पल विधान सभा मा—धन्नि कुसीं महरानो	१०४
कुरसी काल भई	१०६
सब गावे एकता गीत	१०८
अब कै किसान	११०
पहिचानी गई	११३
दोहे	११४
हुइ जाइ पूत डिपटी तुम्हार	११५
हिन्दी दिल हइ अउ मुरदा हइ	११८
दोहे	१२०
आवउ मिलि जुलि निरमान करी	१२१
वहै देसु हम पावै	१२२
दोहे	१२४
भूतनाथ का मेला	१२५
वहै देसु हम पावै	१२७

छाँड़ि तुमँइ न सहारा कोऊ

ध्यान धरौं कछु अइसोइ मातु,
 कि हूमर कौनँउ ध्यान न आवै ।
 अइसी करौ किरपा ममतामयी,
 जो जडता जग ते विनसावै ।
 मइया तुमँइ नहिं देर लगै,
 छिन मा जुग कै विगरी वनि जावै ।
 कानि करौ कछु अम्ब न पूतु,
 कपूत बनै तुमका लजवावै ।

जो न मिली ममता अबको,
 तुमरे समुहे अब रोइव नाही ।
 ठाढी रहौ चहै पानी लिहे,
 तुमरे कहे ते मुँह धोइव नाही ।
 भूँखइ पैट गंजौनन खेलत,
 कौनिउ आम संजोइव नाही ।
 देहौ न जो नरना वनिबा पवि,
 भूलि हूँ मानुष होइव नाही ।

छाँड़ि तुमँइ न सहारा कोऊ,
 मन मा जहु आठ घरी अब आवइ ।
 गाढे को साथी वनी अब कौनु,
 जो मइया न पूतु को साथ तिभावइ ।
 तौनी तना रहिवा जग मा हम,
 जौनी तना हमै मइया बसावइ ।
 कइ कवहूँ जहु मभत्र हइ,
 रिरुकइ लारका महतारी न धावइ ।

आगि क गेह ते आगि कै भोख,
 मुला बयसन्दर नाम धरइहै ।
 कौन भला जलु हइ जेहिमा,
 चलि वारिधि वाँझ पियाम बुझइहै ।
 चाहै वढै जुगनुँ केतनों,
 रवि कै समुहें न कबौ टिकि पइहै ।
 पाइकै अच्छर हुइ तुमते,
 तुमरे गुन छन्दन मा कवि गइहै ।

लाज बचाइवे खातिर जो,
 डग हुइ धरिकै चली आइहौ मइया ।
 माँचु हइ पूतु कपूतु भवा,
 तुम काहे कुमाता कहाइहौ मइया ।
 हइ विसवासु हमै भरपूर,
 न बाँह हमारी छोड़ाइहौ मइया ।
 सूरज हुइ सबका एकसै,
 अँधियारे म ज्योति देखाइहौ मइया ।

उपजाऊ करि दै भुँइ बदरा

सुख का करै अकासु वरसु रे
मामबेद हुइ कठ सरसु रे
कवौ न बुढ़िया होइ जवानी
बनी रहइ जह बोली बानो
घट-घट मा भरि-भरि दे अमिरत
हरे रहँइ हाथन कै गजरा

उपजाऊ करि दै भुँइ बदरा ।

धूँघट मा चितौनि ना बूड़इ
कौनउँ ना किमान का मूँडइ
हक न होइ निआउ की छाती
विन मनेह ना टूटइ ब्राती
रस रस चुअइ पियाह नयन ते
जुग जुग जिअँइ घरन मा तखरा

उपजाऊ करि दै भुँइ बदरा ।

रहइ हौंसिला आस न टूटइ
गाडी धोरज केरि न छूटइ
जल-थल नेह बँसुरिया बाजै
गेहूँ लिहे देवारी राजै
भारत कै कीरति नित बाढ़ै
रहइ सुकालु परै ना पटरा

उपजाऊ करि दै भुँइ बदरा ।

हम कलाकार हन भारत कै

जीवन कै बदलेन धार हुँकरि
 निज प्रातन का उत्सर्ग कियेन
 कठिनाई केर पहाड़न पर
 फहराइ धुजा हँसि खेलि जियेन
 मानेन न साँच मा आँच कबों
 दिढ़ कलम चलायेन औ' भोकेन
 जिउ ते पियार भारत कै बदि
 आपन सुख भट्ठी मा झोकेन ।

जब जाति-धरम पर बलि आई
 जब करिया धन्वा ललकारिनि
 चन्दन ते पावन माटी पर
 जब रिपु तिरछी निगाह डारिनि
 तब हमरी कलम मसाल लिहे
 पानी मा आगि लगाइ दिहिसि
 जो बाघ नींद मा रहँइ परे
 उनका हुड़बंगि जमाइ दिहिसि ।

जब माँहु भवा हिम्मति हारेन
 तउ गीता सुन्दर दिहिसि ज्ञान
 झट समर भूमि मा कूदि परेन
 सब मरइ जिअइ का छोड़ि ध्यान
 जगि परेन चन्दबरदाई मा
 बनिकै भूषण आगे आयेन
 विसमिल ऊधमसिह राजभुइ
 हुँइ भगत क्रान्ति कै गुन गायेन ।



भिजई बिलार न वनेन कवी
 प्रन पालेन नित स्वच्छन्द रहेन
 परवन के छाती वज्र फोरि
 जग देखि चुका अनवरत बहेन
 हम कवि हन भारत के सपूत
 पतझर का नव मधुमाम दिहेन
 धुट्टी मुर्दा आदर्शन के—
 हड साँचु न कबई भूलि पियेन ।

गरदन कटि गइ मुल रुकेन नही
 अंगारा कविता ते झारेन
 हन युग-बानी के आराधक—
 लड़तइ मरिगेन मरतइ मारेन
 जब अनुशासन के टिकटी मा
 शासन के लासि देखाइ परी
 फुंकिगा निआउ का जब इंजन
 बेडमानी झडी दिहिसि हरी ।

फूलन के बदले मन्दिर मा
 जब करिया काँटे गडै लाग
 घट मा अमर्गित के फनु काढे
 गोरे भुजग जब बढै लाग
 राक्षसी काम की क्षुधा लिहे
 नोचिनि पुहुपन का जब भौरा
 तउ कवि आपन सन्देसु दिहिन
 भूला भारत कुतिया मौरा ।



धरम हइ नेतन का हथियार

दुनियाँ भरि कै मन्दिर मझिजिद
कव छँडिहैं गुरुद्वारा जह जिद
मठाघोष बेंचेंड ईसुर का
फैलावँड व्योपार

धरम हइ नेतन का हथियार ।

रहेन रेल की दुइ पटरिन अम
कहेन मुला प्रेमइ ते मरबस
सब ब्वाटन बदि पीटँड ढफली
कुरसी की तकगर

धरम हइ नेतन का हथियार ।

जेहिका देखल परेसान हइ
पाँउ थके मुँह बियाबान हइ
जुलुम सहति सब उमिरि भिजारेन
जूँटइ इन हकदार

धरम हइ नेतन का हथियार ।

मेहनति की जह नाव न बूडइ
गैतल का मोटकवा न मूँडइ
धरती नभ वनि मोडया गावँ
सरगु बम संसार

धरम हइ नेतन का हथियार ।

बनँइ न घर जइ जेल हमारे
मन ते मानुष होइँ न हारे
एक धरम जह दुनिया मानै
बजइ प्रेम को तार

धरम हइ नेतन का हथियार ।

अइसे मास्टर का नमस्कार

सिच्छा अस अदिमी की पूंजी जेहिका ना चोर चोराड सका
खरचे ते बाढ़े नित्त और जानिन का को भटकाइ सका
मानेन स्वतंत्रता पायेन हम, हुइ गेन स्वतंत्र फिरि कटकटाइ
यूनियन बनायेन दिह अपनिउ निकसेन सडकन पर बजबजाइ ।

अस गगन-फार, बकबाधि किहेन नारन कै दफती लिहे हाथ
लरिका किंगिला देखिनि हमरी लइ नवा जोश हुइ लिहे साथ
सोचेन हमहूँ नौकरी बनइ चीनी जूता अस फौलादी
यहि सासालीदी मा कब लौ पिसिहै मेहरारू औलादी ।

कलजुग कै ढाल मंगठन हइ हाकिम हरहा ना छेड़ि सकँइ
साथइ हर साल नतीजा कै दइ नोटिस नाँहि खदेड़ि सकँइ
रुपिया को पायेन महामंत्र शासन ना अब दुरिआइ सकइ
हम चहै जो करी हन स्वतंत्र परबत का कौन हलाइ सकइ ।

परबन्ध कमेटी हइ हमार ना ओहिका कुछ अधिकार रहा
सरकार बनो ब्रेतन दाना चोरइ हुइ पहरेदार रहा ।
अनुशासन सब हुइगा विशंकु हम आपनि मौजइ मार रहे
अब हुकुम अइम् लागँइ हमका जइसे रट्टी अखबार रहे ।

फैसन दुनिया कै देखि देखि हम अदबदाइ भेन दीवाने
तोरेन अइयासी को रिंकाट करतब अपनायेन मनमाने
पहिले टिंउशन मा मेहनति करि निपटेन कुछ दिन महँगाई ते
अब तौ विरकुल जिउ भाजि गवा हइ लागति हमँ पढ़ाई ते ।

सब छाँड़ि पढ़ाई दुनिया की हर गतिविधि ते मतलब हुइगा
हम हुइगेन गुण्डन कै गुण्डा ना शिष्टाचार रंच छुइगा
कुछ पालेन लरिका सडकछाप सँझलौखे बोतल खोलइ का
फिर बकइ लगेन हम अन्ट-सन्ट केहिकी हिम्मत अब बोलइ का ।

ठेका लड़ लड़ फिर लरिकन का झूठे नम्बर दड़ कियेन पास
 लरिकन लड़ डिगरी रहे चाटि बनि गयी नौकरी नाग फौम
 सब चरै भेजि आदर्शन का बलि रोटी की देखेन दुनिया
 हड़ गयेन गुनन ते बहुत दूरि रहि गयेन गियककड निरगुनिया ।
 अब रोड रहेन मम्मानु मिलइ हन गुन देम के कर्णवार
 हमका निहाणि कहि रहे लोभ अहमे मास्टर का नमस्कार ।

चेतु रे भारत केर किसान

कटवाइनि सब तोहरेइ लेत
 ऊन निकासिनि मारिनि बत
 महल रहे सुसकाइ देखि के
 सब दित तोहरेइ सूख परान
 चेतु रे भारत केर किसान ।

नेता तिकडम ताल भँजाइनि
 ऊँच मचान बैठि हरिआइनि
 तोहिकड जानि बैलवा जोतिनि
 क्षुधा बाँटि खाइनि पकवान
 चेतु रे भारत केर किसान ।

धरम बताइनि रारि कराइनि
 मन्दिर महजिद मा अरमाइनि
 स्वारथ के अस धुँडी खोलिनि
 नदी करिसि आपन जल पाक
 चेतु रे भारत केर किसान ।

लिखा किताबन मा जन तथ
 सबद सबद मुख हँइ परतत्र
 श्रम कै देउता तडपै बिलखै
 काहिल हँइ श्रीमान—।
 चेतु रे भागत केर किमान ।

*



यहै दुखन दुबरे हन

हम बसि यहै दुखन दुबरे हन
 फेरि न लौटि गवा सुख अइहै ।

अपनी धुन मा दादुर बोलँइ
 जोगुर जीवन मा रस घोलँइ
 पलकन मा उबलति लइ सपने

जामें कब सरिता उफनइहै
 फेरि न लौटि गवा सुख अइहै ।

बरखा मा बाजार मँझायेन
 धूप छाँह मा खेलि गँवायेन
 मान मनौती किहे न पायेन
 पंथु जहाँ ना मनु लँगइहै ।
 फेरि न लौटि गवा सुख अइहै ।

बेलि चढे विरबन कै ऊपर
 चातक गढे कथा नित भू पर
 नई लिहे परतीति पिकी कब
 जुग बदि नवा सदेसा लइहै
 फेरि न लौटि गवा सुख अइहै ।

विजुरी बूंदन की जड़ चोर्टेइ
भूधर ढोवेंड हिम की बोर्टेइ
मौसम-जाल फंसी गौरैया

कब निरमल नभ उडि उडि पडहै
फेरि न लौटि गवा मृग अडहै ।

आँगन का घाम

फुफकारै आँगन केँ घाम

भट्ठी की लपट भई साँस
सूखि सुखि गन्ना भेँ बाँस ।
सब करेजु तालन का फाट
बिगिछ लगैइ ठूँठ अस उचाट ।

लुअँइ करिनि पथ की गति जाम
पौरूप भा शीत केँ बेराम ॥

कमरन मा बन्द दौर घुप
पनघट मुँह वाइ भे अरुप ।
प्रदेसी सहि न सके ताप
बैठि रहे छबि गृह चुपचाप ।

कसमसान खेतन मा काम
सबद गये खौलि खास आम ॥

सडफ भई अगिया बैताल
खूँटा का तोरि भजा काल
सुधी भये राधा केँ व्याम
लटकन की छाँह केँ गुलाम ।

पसरि रहे बिसरे जो नाम
हफि रहे जन मन केँ राम ॥

भगवानइ देस चलाइ रहा

भीतरै भीतर जल कै लाइन सीवर कै लाइन ते मिलि गइ
घर की टॉंटी ते मल निकला रहतूति गन्दिगी ते हिलि गइ ।
जब आगे थोरी दूरि चलेन औरउ बिकासु कुछ देखि परा
कूरा के ढेर खखोइ रहे दुइ नौनिहाल कटरा वछरा ॥

सीवर कै गडहा मा गिरि कै मनई देखेन चिल्लाइ रहे
समुहे दुइ कौड़ी कै जोशी सब भूत भविष्य बताइ रहे ।
होटल मा गयेन खाइ खातिर तउ आइ गये लकदक वैरा
बोले बाबू जी का खइहउ ना खाँड हियाँ नत्थू खैरा ॥

दस बीस किसिम के भोजन उइ छिन बित्तर माँहि गिनाइ गये
पानी पियाज मिरचा सलाद बिन कहे तुरन्त सजाइ गये
जो जन समुहे तन खाति रहँइ अस लगा कि उइ भिभिआइ परे
जइमे कण्टु बिजुरी मागिसि डेरभुते ठाँड घिघिआइ परे ।

बकरा कै बोटी के धोखे लरिकन कै अँगुरी देखि परीं
हाथन मा उनके कौर रहा जरिमे परान सब भुख हरी
तुरतइ छी छी करि बाहेर भेन होटल का देखि लियेन खाना
वच्चन का मासु बिकाइ लगा तब यहौ नई किरिला जाना ।

एकन ते बोलेन ओ वहिनी उइ बोले हमका दइ गारी
हम बाप अहिन यहि लरिका कै तुम कस समुझे हौ महतारी ।
तब देखेन एक पगलिया का सब कथा सहर की बाँचि दिहिसि
देखतइ हमका उँचियान पैटु भारी पाँवन ते नाचि दिहिसि ॥

जगली जानवर ई मानुष कुछ अन्ट सन्ट बोलइ लागी
मनमा मोचेन फटिगा बादर, मभ्यता नई खोलइ लागी ।
उप्पर कोठी अगगाम छुअँइ नीचे नालिन पर वइठे नर
कुछ काटँइ दिन फुटपाथन पर कुछ आतप सहे ओलँइठे नर ॥

बाहेर हँड पौडर क्रीम मले भीतर कोइला कै खान लिहे
जइ महानगर के रहवैया साँपन की जीभ पुरान लिहे ।
हँड बडे बड़े जन बूड़ि गये इन मटमइले व्योपारन मा
जो पक्के छिनरा रहँड नौन डोली के संग कहारन मा ॥

जरि गयेन देह का विकति मुनेन ऊँचे कोउन पर खुले आम
होटलन मा कालगर्ल बनिकै नारी भारत की करँड नाम ।
कुछ मिले कि जिनका कामु यहै अफसर मंत्रिन के डिग आवँड
बड मिरसिकार परिवारन ते लरिकिनी पटावँड पहुँचावँड ॥

जोदानर का मन्तव्य मिला रुधिया पइसा अउ रोटि हड
दुनिया बाहेर, ते सुघर बड़ी मुल भीतर बहुते खोटी हड ।
कहुँ सट्टा का व्योपार मिला कहुँ बातन का बाजार मिला
ना पायेन किरन सरलता कै चौतरफा ते अँधियार मिला ॥

जइ थाने जिनकी कोठरिन मा चीखड मरिकै हुइ गयी बन्द
राक्षसी काम कै भूखन मा नुचि गये फूल लुटि गे मरन्द ।
नाली कै दाँती पर अटकी ओपड़ी एक फिरि देखि परी
वातँड सुनिकै दुइ लरिकन की अफसोम भवा अउ गाज गिरी ॥

लरिका बोला बप्पा बप्पा अब कब कौनउ घर मा मरिहै
तबहँ भोजन बढिया मिलिहै जब कौनउ सेठि दया करिहै ।
जब मञ्जिले चचुआ भरे रहँड मिटलोने व्यंजन दिहिंसि रहँड
ओहिकै बदले दुइ चहर दउस बेगारि अकडि कै लिहिंसि रहइ ॥

चिमनिन का घुसि कै धुआँ पिअँड हँड आपनि हड्डी कूटि रहे
बोह जपर थपर टूँगँडे ठाढे औसरवादी सुख लूटि रहे ।
कबि कै सामर्थ्य नही येतनी भीतर का बाहेर खइ आवइ
परदा कै पाछे की लीला को कहइ और केहि विधि गाबइ ॥

सबदम मा ब्रह्मि रहि गइ केचुल भगवानइ देस चलाइ रहा
बाधू चरचा करि ब्रेचि रहा उनहे की कसमें खाइ रहा ।
हँड जनता का भरमाइ रहे भारत कै साख गँवाइ रहे
ई नेता कुसीर कै खातिर हँड धमकच्चर मचिआई रहे ॥

धरम के खातिर तुम इन्सान बनौ

बनी रहइ जह धरा गान्नि की फुलबारी हौ चाहति जो
 बनी रहइ भारत की धरती महतारी हौ चाहति जो
 पावन केरी शक्ति बटोरे जिअँइ परान अगर चाहौ
 बजइ गीत मुरली के सुर मा हे श्रीमान अगर चाहौ
 गीत गजल दोनउ मा निखरउ
 नर हुइ ना शैतान बनौ ।

देखि चुके हौ अस्त्र-यस्त्र तुम ढेर लगे पूजा धरमा
 प्रनिमा ते बढिके महन्त हँइ नौकर बने त्रिश्चकरमा
 आये दिन नीलाम होलि ईमान देखि डारेउ तुमहँ
 विकति रोज भगवान देखिकै तीन साखि तारेउ तुमहे ।
 अगर न चाहौ उजरै बगिया
 तुम भुँड का बरदान बनौ ।

काँटे बनिहै फूल अगर दिल मा रहि जइहै रच नमी
 हियाँ न हिंसा कवौ प्रेम के दरपन पर बनि धूरिजमी
 मस्तो कै मन जहाँ हुआँ आँधी अइहै तउ थमि जइहै
 जीवन की सौगाति पाइकै मूरख मानुष रमि जइहै
 चाहौ जो न कटइ नित मूरज
 नेहो हिन्दुस्तान बनौ ।

भेद भाउ हइ हियाँ न कौनउ एकइ साँझ विहान हियाँ
 एक बाप के सब लरिका हँइ एकइ हइ भगवानं हियाँ
 पिअइ जो चहै सुधा प्रेम की जह जगती भिनसार कौ हइ
 छाँडि दिहिसि अभिमान जौने जन धारा तेहि करलार की हइ ।
 चाहति हौ जो मरग सूवो
 बाँटउ जोति महान बनौ ।

जाने कौन सिन्धु के जौर छिन मा जीवन बहि जइहै
 कौनी टीसन ट्रेन साँस की बिना निमंत्रन रहि जइहै
 बिना बनाये सहज बोलता यहि मकान ते छुटि जइहै
 वैभव निहे रूप को राही कौन राह मा लुटि जइहै।
 बुनौ न कवहूँ यहि ते उलझन
 परहित के प्रतिमान बनौ।

देस के प्रानन मा उतरउ

तुम झरना अस झरउ
 देस के प्रानन मा उतरउ।

गंध लुटावउ हृदय बसै जो
 बाँटउ आपनि हँसी हसँइ जो
 चम्पा अस देही के भीतर
 रहि रहि तुम निखरउ
 देस के प्रानन मा उतरउ।

उड़इ, पराग गाँव गल्ली मा
 ज्योति मलउ कल्ली-कल्ली मा
 मानुष जीवन मिला जिअइ बदि
 अमरा मौत मरउ
 देस के प्रानन मा उतरउ।

आँगन केर अकास तुम्हारो
 सधुर चाँदनी रास तुम्हारो
 किरच किरञ्ज करि गहन अँधेरो
 बुनउ सवेर, बुनउ
 देस के प्रानन मा उतरउ।

आपनि बोली मा रसु घोरउ
भुँइ पर रहउ नखत ना तोरउ
पथरत ते निचुरउ गगा अस

निरभय हुइ विचरउ
देस कै प्रानन मा उतरउ ।

हम बसन्त के फूल बनी

जीवन केरि नई परिभाषा
मुँहवोला मौसम बाँटै
गन्ध सनी जह हवा नित्त
चिन्ता कै रुखन का काटै

नहीं नेह कै बिरवा उखरै
नदी बनी हम फूल बनी

दुलराडति काँटे पलकन ते
जिअड न मुल जगल उर मा
सपने मा न पीर खटकावै
बजै गीत नूतन मुरमा

नई फसल अस नित्त मन बाँहै
भूलि न कबहुँ बबूल बनी

जब बिनास कै छाती चढि कै
नाचै सिरजनहार नये
कारि कोइलिया रागु निकासै
चिट्ठी बाँचै भोर भङ्गे

बलि को पन्थु जौन नर नापे
उन पाँवन की धूल बनी ।

दिया टिमटिमाइ लाग

कुर्मी के हवा लगे दिया टिमटिमाइ लाग

परबत अस मनु मानौ धूरि मा बिलाइ गा
स्वारथ की भीर लगी साँचु जनु धिनाइ गा

बाला भइ जीभ अपन
सबद गिड़गिड़ाइ लाग ।

देउता परसादु पाइ अपनै सब खाइ गवा
अकड़ि-अकड़ि चलइ क्यार मौसम फिरि आइ गवा

बादन का कुभकरन
जगि के सुसुआइ लाग ।

दीमक भइ राजनीति गीता के पत्तन पर
बातन के फूल झरँइ सीत मा घोटन्नन पर

रूप देखि रावन को
दरपन भिभिआइ लाग ।
कुर्सी की हवा लगे
दिया टिमटिमाइ लाग ॥

गणतंत्र पिआरो प्रानन ते

नित नई महाभारत देखउ गणतंत्र दौस की बेला मा
 वसि पठउ पहाडा व्वाटन का कुर्सी के ठेलम ठेला मा ।
 जिनके गरजन ते फटा गगन उइ नारा कतौ विलाइ गये
 जो रहँड छकाउति भुँड हमारि उइ वादर सूम उडाइ गये ॥
 तब रहँड दहाडति बाघ अइस शोषण अउ अष्टाचार देखि
 डेरभुने लगँड उइ पहुँचि हुआ करिया परवत अँधियार देखि ।
 जो सत्ता लडि अडि कै पायेन झूठे मुधार मा धँसि न जाइ
 चीरइ जो कौनउ लहरि लगी गहिरे दल-दल मा फँसि न जाइ ॥
 यहि डर ते भइया जौन होइ बोलिवा ना कुर्सी बची रहइ
 आनकवाद और रिसवत की पाँवन मा मेहदी दी रची रहइ ।
 कहँ मँहगाई मुँह वाइ रही कहँ जलम भूमि का अगड़ा हइ
 सब लौटि पौटि हुअनँड ठाढे जो गाल बजाबइ तगड़ा हइ ॥
 पजाब केरि किरिला दुनी चौगुनी रात दिन होति जाति
 हम खाली गाभिन वातन मा अटके हन जोरे कुछ जमाति
 मुर्दा तउ सब एकसै देखान बमि बदलि-बदलि कफफनु आवँइ
 जब मौत ठाँढि समुहे ताकइ तउ करँइ खुशाभदि मुँह वाबँइ ।
 सागर की वातै कौनु करै ओथले पानी मा बूडि रहे
 अडा रंगु चाहँ जौन होइ सब मिलि जनता का मूडि रहे
 हइ जौन देस मा भेदु नीं हत्या मा अउ कुरबानी मा
 सच्चवाई जहाँ लुकाइ रहइ आतंकवाद कै बानी मा ।
 कवि माँगि रहा है कमते कम बलिदान करौ बदनाम न अब
 गणतंत्र पिआरो प्रानन ते हँसि खेलि कौर नीलाम न अब ।



सागर देखेन

आजु रस भरा सागर देखेन

वनि अकाम लहरइ जो हिय मा
चाह कि निन्त रहइ जहु जिय मा
नाचति नटवर नागर देखेन
आजु रस भरा सागर देखेन ।

तट ते चलेन नाउ मुल भूलेन
लहरन की वाहन मा झूलेन
अग जग रूप उजागर देखेन
आजु रस भरा सागर देखेन ।

जबहि थमा ननिकउ कोलाहल
बँधे काल तीनउँ एकइ पल
घुटुअन चलत छपाकर देखेन
आजु रस भरा सागर देखेन ।

कल्प बिरछ कै मिली गाछ जब
बहि गइ मन की पूछ ताछ सब
मुखर मौन कै आखर देखेन
आजु रस भरा सागर देखेन ।



बूढ़े विरिछ तुमँइ पहिचानेन

गये बिलाड हिये कै जगल
छूटि परे खग नसा अमगल
यहु जीवन छिन जियना मानेन
बूढ़े विरिछ तुमँइ पहिचानेन ।

उडि-उडि आपन पख पसारेन
कइ अभिमान अकास भिजारेन
निज करतूति समुझि हठु ठानेन
बूढ़े विरिछ तुमँइ पहिचानेन ।

सबदिन दिहेउ सहारा तुमहे
नाउ-कूल-मझधारा तुमहे
तुमरोइ जगत पसारा जानेन
बूढ़े विरिछ तुमँइ पहिचानेन ।

बाहेर भीतर एकइ दुनियाँ
भयेन पुलकि साँचउ निरगुनियाँ
बाघ-गुफा यहु तन अनुमानेन
बूढ़े विरिछ तुमँइ पहिचानेन ।

मूखि गयेउ अब ना हरिअइहौ
औसर पाइन फिरि धरि खइहौ
छाड़उ पिन्डु बहुत अकुतानेन
बूढ़े विरिछ तुमँइ पहिचानेन ।



बरखा

बरखा रितुअन कै रानी हइ

वरसाइति पूजा अन पावनि

राखो अस अनिशय मन भावनि

नीके दिन केर बोलउआ जस

जह साँचु वेद कै बानी हइ

बरखा रितुअन कै रानी हइ ।

मीरन कै पाँवन ते नाचै

वदरन ते ममता का वाँचै

धानी अति गाढि चूनरिया मा

लहराइ रही भरि पानी हइ

बरखा रितुअन कै रानी हइ ।

चुलबुली काम कै सपन तरी

रसकै मूरति तनि कमक भरी

घरती की थकनि पलोटि रही

लरिकन कै मीठि कहानी हइ

बरखा रितुअन कै रानी हइ ।



चन्दा मामा

तुम महतारी कै भाई कइसे तुमका दुरिआई
मुल तुमका आइ तपेदिक तउ कइसे नेहु लगाई ।
रोगन ते कौन निभाइमि यहि जग मा नातेदारी
नीके कै गाहक सब हँइ दुनिगा कुरूप दुखियारी ॥

जब पहिले पहिले देखेन तउ सपना जइसे आयेउ
अनजाने मा मन भायेउ फिरि रहि रहि रमु वरसायेउ ।
तुम घटइ लगेउ पल छिन मा घटि घटि कै अन्त बिलायेउ
हमरे चिन्ता तब्र जागी दुविधा मा चिन्तु फँसायेउ ॥

चचुआ हकीम ते पूछेन जइ कइसे हुइगे मामा
सिरकिट्टी हुइ कै छिपिगे आपन समेटि पइजामा ।
बोले हकीम जइ रोगी हइ इनेइ तपेदिक भारो
इनका जग नहूँ न छाँड़इ जानइ मरिहँ महतारी ॥

अबहूँ अकास मा आबँइ तउ आपन रूप देखाबँइ
लइकै कनियाँ मा हमका मामा कै कथा सुनाबँइ ।
कहुँ कहँइ थार, सोने का कहुँ अमिरत भरा पियाला
चाँदनी तुम्हारी माँई जइ हँइ बप्पा कै साला ॥

तालन मा नाचु देखावै जब ताकँइ कोकाबलियाँ
जइ मामा हँइ मनमौजी मुसकाइ करँइ रगरेलियाँ ।
माँई हँइ भोली भाली अस नटखट दुलहा पाइनि
या भारत कै कन्या का देउता मिलि खूब ठगाइनि ॥

अम्मा चीनी पतिव्रता चादनी तुम्हारी माँ
जो पति के साथ लटी रहे अउ साधु मा हरिभ्राई ।
जह जन्म जन्म के जोगी मरिण मा जीहः मरिहै
दोनउ का विधना बोरिहै दोनउ का मरः हरिहै ॥

हइ प्रेम जगन का स्वामी जेहिनी नर थाह न पावै
यह सबने बड़ी बचै जो जगन गरि लगारै ।
कुछ बाँधे जान गठिया मौ नहँद रख बन्दा मा
पाथर अउ गडहा पाडनि आपन खोजी बन्धा मा ॥

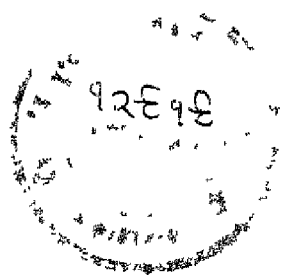
तुम कहेउ कि दूध बनामा जट मामा लहके अहहै
मुल का गड़हन ते मडया । अउ जट मडया उपजउहै ।
जो सूतु बैठि के कानउ बुद्धिया मामा के छानी
जहु जाइ कहीं सब कपडा ना कौनउ मग मँधानी ॥

नौकरी करैद सब प्रण की नय समुझाडसि मझतारी
बस एक नचावनहारा जग नाच रग दइ तारी ।
सब सूतु डकटा कडके भगवान गोदाम बनायै
जब होई दुरपदी नंगी उनका थोर पहुँचावै ॥

मामा बेराम बनि बनि के यू दुनियाँ ममझावै
जइ दुख के दिन ना रहिहै जो सुख के न रहि पावै ।
चाँदनी काम की तपि के अग जग का भोज बनावै
लइ जरी मौत के बटुली जीवन का हाथ छोडावै ॥

करिया सफेद के जोड़ा करि के यह काल विभाजन
यहि लुका छिपी की विधि ते जगदीश्वर के आराधन ॥

बोलावति हमैं



न जानै कौन बोलावति हमैं

धोवाई चादरि जइसी राति
दून रवि कै जुगनू हुलसाति ।
ओम मा देही भिजये पात
करइ अउरउ बयारि कुछ घान ।

गमकि बेला बहकावति हमैं
न जानै कौन बोलावति हमैं ॥

रहे छपरन मा सपने मोड
पाँउ मा काँटे खोवरे वोड ।
थकनि मा काम मचावै रारि
नबोढा बिहँनै मन का मारि ।

नींद ते कौन जगावति हमैं
न जानै कौन बोलावति हमैं ॥

साँस कै आवा जाही बढै
सिमिटि सन्नाटा मूडे चढै ।
कमल मा हृइगे भौरा वन्द
एक झीगुर गावै बसि छंद ।

अकेले समि मटकावति हमैं
न जानै कौन बोलावति हमैं ।

जइम खंडहर या बिजुरी होइ
रहो झुरिन का सिरजन ढोइ ।
राह निसुसै मंजिल की वाह
होइ जस लोभ जज्ञ कै छाँह

टपकि महुआ सनकावति हमैं
न जानै कौन बोलावति हमैं ॥



बिन पइसा ज्ञानी उल्लू हइ

हिरनाकुस के अब बाधा आइ अदिमान रहइ जेहि की पूंजी
 ईमुग ते बढि के मानि रहा कइ सकट कौन तेहि की दूजी
 हइ हुकुम बडा भगवानेंउ ते मन मा जेहि के बिमशायु जमा
 सनकारिसि जेहिका चला सौन रोकिसि इगिन करि वहै थमा
 सन पिता सुतन ते कहइ लाग वरभिचार करउ व्यभिचार करउ
 जेहि की बदि धरती पर भायेउ ना सुनिवा पर अंगार धरउ ।
 मच्चाई की फुलवारी मा अघरम की आगि लगाउ देउ
 जो बचा खुचा पावौ निआउ उनपानु सकेलि भगाइ देउ ।
 पूंछी को ज्ञान तुमारो जहु बिन पइसा ज्ञानी उल्लू हइ
 यहि जग मा मानी धरमिन बदि बुडइ का जल दूइ चुल्लू हइ ।
 तुमरे भोवना के ग्यातिर जो कौनउ लरिकी वाले अइहै
 जो पइहै तुमका घरमपाल गउ हाथ मीजि के पछिनइहै ।
 बणा बोले लरिकउना ते छौंडउ जह माँची राह पून
 बेइमाना चोरी गहजनी हइ कौनउ नही गुनाह पून ।
 वह गुरु कहाँ ? जो पिटा नहीं ना ठगि के किहिसि कमाई हइ
 कलजुग मा मंतर यहै फला जेहिकी लाटी वहु भाई हइ ॥
 जो यहि विधि ना गडबड अरिहौ नेता ना कबहूँ बनि पइहौ
 आपन प्रभाउ ते माँचु लिहे बसि निबुआ चाटति रहि जइहौ ।
 कुछ तत्त मिले बतिगा मानुष ना कौनउ सिरजन हार हियाँ
 जो करिहै ना हेरा फेरी वहु पइहै ना भिनसार हियाँ ॥
 अब धरउ कितारे मेहनति का हउ बँद तुरन्त दया छाँड़उ
 हउ व्योपारी तउ शोषण के गडहा मा सब मजूर गाड़उ ।
 जो अधिकारी तउ फाइल मा बंधक कइ राखौ राजि पाटि
 जो दुकनदार काँकर गवडउ चिन कसम ग्याउ अउ देउ घाटि ॥

जो मग मग जुग धारा कै आदश छाडि तुम बहिहौ ना
 विपरीत हवा मा हफिक डफिक दुइ पल से फादिल रहिहौ ना ।
 जो चाहि रहे हौ रैन चैन छनु छाँड़ि सुदामा बनौ नही
 भूखे नंगे तपसी त्यागी या गइया व्यामा बनौ नही ॥

महतारी बोली ओ विटिया तुम चुनउ अइस वरु मानभावा
 जो गिसवति ते भरि कै जेबँह भँवलीखे लौटि घरइ आवा ।
 हिरनाकुम के जुग मा मंत्री सपने मा बड़ बड़ बोलि रहा
 कलजुग की किरिगला की किनाव मानौ गहि रहि कै खोलि रहा ॥

राजा मन्त्रिन की सिच्छा हइ ओ परजा जन लूटउ फूंकउ
 जह है जीवन का चढी पारि लुटि जइहै दुनियाँ ना चूकउ ।
 खुद लउ भौरा अस बने फिरउ मेहरार, माना अस चाहउ
 देखउ ना अपन चरितर का औरन की करनी का शाहउ ॥

हइ सुरजी भई पहली जह बहिगनि मडँउ मुल पोल रहउ
 जो गाल वजावइ बहु जनी आपनि पीटनि तुम ढोल रहउ ।
 हिन्दी की करउ बकालन मुल चाही लरिका अँगरेज बनँइ
 अँगरेजी शासन के समान बनि कै अकास बनि यहै तनँइ ॥

सरुआ हँइ भये फेफडा सब सपना मत्री का पूर भवा
 हइ भेड भई सिगरी जनता बसि शोषण का दस्तूर भवा ।
 धीरे धीरे यह अंधकार सँदल प्रकाश का नापि लिहिमि
 सावन भादौ के वादर अस पूरे अकाम का झाँपि लिहिमि ॥



दोहे

आपन आपन भेम मा मुर्खी दुष्ट श्री गन्ध
गाबर के कीडा दुखी पाठ गरौम प्रसन्न ।
खूटा बाँधो भँसि अस राजनीनि के हाल
दूसर चौपाया निरखि भइकि उठै तलकाल ।
आक्टोपम के छुअनि अस दुष्ट मित।ई जान
मानुष मृग के हेतु जग आनेस्क को गान ।
हर कलजुग मा नर वहै सप्रल सजग दीषयि
मुदित भया हठ पिअनि जो बेममी की वायु ।
सबद सबद सब जगि गये श्रींकी कार्लिस मौन
पूछइ उत्तर देह को ममाधान हइ कौन ।
ना भुजंग हइ के उसउ मुख न तजउ फुककार
परम हम का छाँडि हइ यहु जग का व्योहार ।
करिया कौईचा कूबरा आपन रूप अगार
मुल दरपन सबका करै एकमै अंगीकार ।
दोसरेन का दुरिवाइ के निज मुँह रहे बनाइ
औरन का विगरै नही आपन मुँह बनि जाइ ।
जो खिरकी के काम हइ कविताई को काम
यहि थल मेढका कूप को लखति व्योम अभिराम ।
वहिरे के चौपारि जह, हइ बौरा की बानि
कहासुनो को करि सकैः सरम प्रेम को जानि ।
जो चाही प्रभु के कृपा तौ जिशु बनौ अदान
सहतासी अस रात्रिहै तुमका कृपा निधान ।

संध करम समरल वने मधुर होइ व्यउहार
 कवि का लच्छन हइ यहै उर ते होइ उदार ।
 धन की इच्छा ते बड़ी जस की इच्छा होइ
 स्वाभिमान जग मा बडा कवि के मिच्छा सोइ ।
 होइ चटोरी जीम जो और रूप के न्यान
 टहलइ की आदनि अगर भला करइ भगवान ।
 एक पुत्र की चाह मा पायेन लरिको मात
 विरन मिली सपनेउ तरी भई अंधरिया रात ।
 करै क.मना तुम वहै हइ जेतनी औकाति
 त्रौंधी करहु न हइ सकी चूहे जी की जाति ।
 गरमिन मा कुना दुखी बूढे सदी पाइ
 विधुरन की वरभात मा रहि रहि देह पिगइ ।
 दुइ वट्टअन के बीच जो, दुहिता रहइ कुवाँरि
 विना अगिन के जरि मरै निन्त मचावै गरि ।
 घर की मलिकिन क लगै अगर चाट की चाट
 भिनरै भीतर होइ घर, बदि के वागवाट ।



५२५

का करिहैं चिरई चुनगा

प्रातः लै जरी कैन गये गिन
साँझ भइ घर आवत नाहीं ।
भूखेन दौस बितावति हँड मुल
स्वँहु डीजल पावत नाहीं ।
राह निहारि निहारि थके दृग
कौनँउ धीर, बँवावत नाहीं ।
आस जरै बिसवाम जरै
घनश्याम जु काहे बुझावन नाहीं ॥

फाटि गवा धरती का द्विया
पुनि फाटि गयी अँगिया सी जदानी ।
बैठि गये सब गाल बेहाल मे
आँसुन काज मिलै नही पानी ।
बादर ते भुइ रोड रही
मिलिहै हमका कव चूनर घानी ?
हृषफति जीभ निकारे दुखी
रिरिआति भे पादप मानी गुमानी ॥

प्रानन ते अटकी है कहूँ
कोऊ कपफन कै बदि धाँत लगावै ।
वोचइ मा उड़ि जाति मरो
जनौ मूम सों बादर ठेंगा देखावै ।
शक्कर माटी को तेल औ रासन
भाषण मा जनता नित पावै ।
वच्चा मरै चहै जच्चा मरै
मुल नाउनि गीत पुरैते को गावै ॥

का करिहै चिरई चुनगा जब
 खतन मा कहुँ वीजुन पइहै ।
 का कहुँ इन नालन मा अब
 भैसिन के मिलि झुड नहुइहै ।
 का कबहुँक उये सविना
 अरविन्द उधारि मरन्द उडइहै ।
 कौन घरी सजनी अब प्रीतम
 घास धरे सिग भीजति अइहै ॥



ईमानदारी कइसे निभइ

मत्र खँइचइ का खाल तैयार
 ईमानदारी कइसे निभइ ।

व्योपारी बेइमान कहावै
 बिन बेइमानी पार न पावै
 बोलाई साँचु तौ हाकिम हरहा
 पूंजी तौनउ नोचि नसावै
 लंड दमाद ते जादा खातिर
 इस पेहर मुछमुडा सातिर
 बनइ न गैतल कस व्योपार

ईमानदारी कइसे निभइ ।

सपलाई अपुसर मुँह बाये
 अनखाये हइ जे अनखाये
 रहो सहो नेता पलझावै
 थाने दोहरी मार लगावै
 लगी रहइ रासन मा लाइन
 करि विलेक सब माल नघाइन
 कौन घाटा सहइ कोटेदार

ईमानदारी कइसे निभइ ।

बोम नाम मरका न आग
 अब प मरी का बाबा
 पाँच लाख अपसर क साथ
 दस फिगि ठंकेदार के साथे
 वनतइ वन पुल पुलिया दूठंड
 वारु के फव्वारा लूटेंड
 लानेंड कहाँ ते ठंकेदार

ईमानदारी कइसे निभइ ।

नेना कहइ कि मंत्री जानइ
 मंत्री कहइ कि अपसर जानइ
 अपसर कहइ कि बाबू जानइ
 बाबू कहइ कि फाइल जानइ
 फाइल कहइ कि पइसा जानइ
 दस मिलि अपनी अपनी तानेंड
 निआउ भवा जमल केरि गुहार

ईमानदारी कइसे निभइ ।

मारिनि वन मंत्री कुट्ट दंगल
 बगियन ते वनर भे जगल
 जौन जहाँ बहु करिसि हवाली
 बात बात मा भई दवाली
 कौनउ मौका जाइ न खाली
 नेता जाली अफसर जाली
 करैइ सविता अँवेर, भिनसार

ईमानदारी कइसे निभइ ।

घटी प्रजातंत्र की बाँधे
 जन पूजा की डोली काँधे
 हम अजेय हन चहै जो करी
 चोरी डाक और लसकरी
 दोहरे मन मा खेलि रहे हन
 स्वतंत्रता अब जेलि रहे हन
 कब कुत्तन का धिउ दरकार

ईमानदारी कइसे निभइ ।

औसर मिला त लूटउ फूकउ
 पछिनइहौ यहि बदि न चूकउ
 वहिया करि लासि अस जनना
 भिनकँड बहुत ओहि सज्जनता
 बैंगला चार अलाट करावउ
 ना फोक्कन मा नाँउ धरावउ
 लडि पइहो कइसे चुनाउ तुम
 हुइहै वन्द प्रचार
 ईमानदारी कइसे निभइ ।

चील्ह भोज

जयमुख लाला कै लरिका की कइके विआह लौरी बरान
 मिलि यार दोस्त माँगइ लागे नेउता कग्गि की बात बनो ।
 हमरउ घर कागटु आइ गवा तनि जिउ जुडान खुशियाली भइ
 कपडा लत्ता धोयेन पहिरेन चलिबे को हफर दलाली भइ ॥

फाटकइ जौर लाला ठाढे जो आवइ ओहिका बैठारँइ
 छिन बित्तन मा भग्नि गँड कुसीं सव मई मेहरआ बोलकारँइ ।
 देखतइ खन छोट गिलासन मा कुछ करुआ करुआ आइ गवा
 सबके हाथन मा जहरु अइस जानै का कौन थमाइ गवा ॥

जस घूँट पहिल खँइचेन तइसेइ मुँह चरपरान बकठाइ भवा
 डेरभुत हुइबुपे धरेन ठौर सोचेन जहु कौन सबाव नवा ।
 तव आपे जयमुख लाला जो बोले अन्न भोजन करउ चलइ
 सब भई मारि कै दौरि परे तउ दारि हमारी कहाँ गलइ ॥

एकन का नुचिगा पइजामा एकन का कुरता फाटि गव
लरिका महतारी ते छटा कोड कइसउ वाराबाटि भव
हुइ मेजन की धक्का मुक्की कुछ लिहे पलेटउ मुँह ताकँइ
कुछ भोजन के संजोग छाँडि औरइ संजोग लिहे हाँकँइ

हुइ गवा कबड्डी अस पाला जो चीरि फारि धुमिगा खाडसि
जो बूढ ठूढ सो रहा ठाढ विरधापन कोमिन मुँह बाडसि
जो रचउ कीन्हिसि लाज सरम बहुपेट कम्पावठ टाढ ठाढ
एकइ मन आवइ एक जाइ सोचैन हुइ फौमिगा आजु गाड

कौनउ तरकारी को चिमचा मीठे पोलाउ मा बोरि दिहिसि
कोउ रसगुल्ला के चुअति रसा खम्ना मा दावि निचांग दिहिम
मेहरारु लरिका अउ आदमी अपनी घानन मा धरै लाग
ज पाइसि जौनी घास फूस बहु कटकटाइ के चरै लाग

कौनउ जूठी लइके पलेट चटनी पिआज ते खाइ रहा
कौनउ अध पिये गिलामन मा पानी लइ घेत नधाइ रहा ।
सौ जनेन क्यार रासन पानी ओहिमा दुइभौ मनई पिलिगे
बाह्यान ठाकुर अउ मुसलमान सब भेद भूलि एकजुट मिलिगे ।

सब तोर देवालइ दिहिसि भोज घन जाति पाँति के अंधकार
कुछ भुखजरु लिहे चले आये बसि चाटि तनिकु जूठा अचारु ।
ठाढ़े भेन जुरि के द्याक ठौर नधुनन मा घुसि भयकाईंधि गइ
ना गली रही सिरकिहिन बदि नेउता की अइस चिराँइंधि भइ ॥

तव लौ आवा लरिकौना जस सब रसा देह पर नाइ दिहिसि
हम देखेन कंटहा तोता अस बहु सारी कहि मुँह बाइ दिहिसि ।
घर मा सुन्ना अग्यारि देखि लौटेन बैरंग सन्तानि देह
सब पूछिनि भोजन कइ आयेउ मुँह सूखि गवा हुइ गेन विदेह ॥

सियाराम मिश्र

गायेन जस देखे

हिम कै बिटिया

जौन हते मंगता कबौ सो
बनि मे महासन्त तुमारे सहारे ।
बानी रसीली करौ तुमहें
हरौ भीर कै पाप भये भिनसारे ।
तारि रही हौ जुगाधिन ते
नहीं ढोल गंवार न सूद बिचारे ।
पाइ कै घाट कबीर भये
न अघीर भये कोऊ आइ किनारे ।

हौ हिम कै बिटिया तुमहे
हिमराज तुमै नित बैया चलावै ।
कोऊ करे अभिमान मुला
शिव के सिवा कोऊ मनाइ न पावै ।
पाप हरौ त्रय ताप छरी
करौ मंगल जो तुमका गोहरावै ।
संस्कृति कै उदघोष सी कोस सी
देव नदी सुधाधार, सी धावै ।

कूरा परा कहूँ लासि परी
कहूँ होइ हजारन कै बटबारे ।
पूत तुमारे बहाइ रहे
कहूँ कोठिन कै गँदले परनारे ।
पाती न बाँचि सकै लछिमी
बहिनी उबका जो लिखै भिनसारे ।
ठाढ़े कहूँ पछिसाँइ भगीरथ
और लजाइ रहे सिव धारे ।

साचु है पूत कपूत भये
 मुलाहौ तुम इन्दर लोक को गइया ।
 प्राण अधार बनी कृपि की
 ऋपि बैठि कै द्वार हूँइ लेति बलइया ।
 एक बनौ अर, नैक बनौ
 महामंतर, नाविक पार करइया ।
 सीतल बाढि सुधाधर ते
 ममतामयी हौ यहि देस की मइया ॥



जब आवा दौस देवारी कै

जब आवा दौसु देवारी कै मेला मा उमड़ी मीड़ बडी
 कोउ थामे लछिमी अउ गनेस कौनउ मद्दुइया लिहिसि घडी
 बाबू जी याकै धूमि रहे साथे मा लिहे मुघर लरिका
 बबुआइनि संघइ उलरि रही हंसि हंसि सुख बाँटि जलम भरिका
 लरिका के दोनउ हाथन मा चमकुआ खेलउना अइस रहँइ
 जइसे माटी की भाखा मा कहि साँचु जगत का सकुचि दहँइ
 यतने मा वहाँ लरिका का दोसर लरिकौना देखि परा
 लरिकाई केरि अजब दुनियाँ जह जानइ ना ठगुआ नखरा
 बोलकारिसि कहाँ लिहे झोरा मेला मा अइसेन धूमि रहा
 नंगे पाँयेन उरझे बारन सब धूरि धूसरित सटपटहा ।
 बहु सुड़किसि नाक निहारिसि तनि मुल रंचउ बकुर ना फौरिसि
 उगिलिसि समाज कै अदिनु घोर कुछ नई सम्यता का झोरिसि
 बलु कइके झोरा खँइचि लिहिसि जो जिउ परान अस हाथे मा
 बाबू बबुआइनि छूटि परे जो रहँइ अमइ लगु साथे मा
 बोला बाबू का पूत सकुचि ओहि मइले झोरा का निहारि
 जइ पउआ मरि खंडी चाउर तुम राखे हौ यहिमा सुधारि ।

जइसे श्रीकृष्ण सुदामा के बगले ते झटकिनि पोटकरिया
 तब निमुसि कहिसि जो गिरि जइहै का खदहै मादी महतरिया ।
 जो कौनउ भूत भविष्य नहीं बसि फटी जाँचिया डोपे हइ
 तम ते जादा परभात मनौ दूग मा नाखून गडोये हइ ॥

बाबू जी आये लौटि पौटि झिडकिनि केहि ते बतराइ रहा
 मगरे बुद्धन संग खेलि खेलि परिवार कुटुम्ब लजाइ रहा ।
 फिरि लरिकौना चिल्लाइ परा जब पहुँचि गवा घर केँ जौरे
 देखिसि दिन्ना का ठेला पर मन हटकिनि पाँउ तहूँ दौरै ॥

ऊ देखउ नेकर का पकरे माटी का तेल भराइ रहा
 हइ मस्त गरीबी बाना मा मन मा जानै का गाइ रहा ।
 मुँह फोरि कहिनि बाबू उदास रदखैली सघति करै नास
 फँसि गयेन हियाँ लइके मकान ना हइ विकास केँ रंच आस ॥

हक्की बक्की औकाति चिहे मुरि मुरि धूरिसि घर चला गवा
 मुँह बबुआइन का अइस खुला नयनू छोड़ाइ जस होइ तवा ।
 जो कारिह गयेउ संघति महियाँ मनहूस पुकारन पर भइया
 तउ जनिबा उजरि सबेरु गवा खूँटा ते गइ तोराइ गइया ॥

साबुन केरी मरजादा हइ बहु यतना मैल छोड़ाइ सकइ
 कब गंगा जलु भइहै ओहिका जो जलमइ और जराब छकइ ।
 कौनउ घर परब देबारी हइ कौनउ घर फाका मस्ती हइ
 अँधियार बहुत हइ दुनियाँ मा रोशनी न आजउ सस्ती हइ ॥

अखण्ड रामाङ्गनि

जब अबकी ते मलमासु लगा घरमा अखण्ड भइ रामाङ्गनि
ढोलक तबला अउ हरमुनियाँ गाजा बाजा सब झमकाङ्गनि ।
दीना दिनेश परभू दयाल जो किहिनि तुरन्तइ फलु पाङ्गनि
जग भगत कहइ उनका लागी हाकिम हरहा सब अपनाङ्गनि ।
देखा देखी के दुनियाँ हइ, हइ धीरजु देखा देखी मा
बहु मुरदा हइ बहु हइ लुजगुन जो भाउ गङ्गिसि ना शेखी मा ।
हन भीतर ते केतनेउ कोइला उप्पर ते सब जन भगत कहँइ
हमरी लछिमी के आगे झुकि मुँह बन्द करँइ मुल स्वगत कहँइ ॥
जेतने अपसर जेतने गाहक रामाङ्गन सुनिबे कहँ आये
इधी काण्डन पर होंई काण्ड बोइ बातन के फागुन लाये ।
दुइ चारि मजूरन अस भुनीम बेमन छंदन का गाइ रहे
घर के मालिक अउ मेहरारू हकिमन आगे सिरुनाइ रहे ॥
देउतन के फोटू श्रोता भे पढवैया भे कुछ नौजवान
फिरि लरिकिन केर झुंड आवा जइसे ब्रज की गोपी उतान ।
लरिकी लरिका संजोग पाइ अठिलाइ रहे मुसकाइ रहे
अउ नई नई तर्जन के मिस कुछ हाउ भाउ समुझाइ रहे ॥
सुनि के रेहकनि बुढ़िया बुढ़वा अधजगे परे अनखाइ रहे
तुलसी बाबा के छाती पर मूँगे की दारि दराइ रहे ।
जेतनी सब किहिनि कमाई मिलि ओतनइ ओतनइ हइ रोगु बढा
मन मा अउरइ कुछ धुकुर पुकुर मुख-राम भाल चन्दन तिकड़ा ॥
उप्पर ते जस चन्द्रमा सुघर विज्ञानिक पाङ्गनि राख मुला
मन्दिर ते उर के मन्दिर लौं जहु घरम गँवाइसि साख मुला ।
जब भरघर आधी राति भई तउ नींद जगी चेतना हरी
सब उल्टा पुल्टा पढै लाग सब रहनि तर्ज रहि गई धरी ॥

आवा प्रमंगु जब सागर का बोले तब राम सकोप कहँइ
 मुल भरे नींद औरिवन मँहियाँ पढि डारिनि राम सपोक कहँइ ।
 श्रद्धा का पढि डारिनि अद्धा सीता का फीता एक पढिनि
 जो रहँइ सबद ना सपने मा तारा का नारा पढिनि गढिनि ॥
 चटकई कौनु अब पढइ अइस लरिकन मा कसिकै होइ लगी
 मालिक मलिकिनि सब सोइ रहे मुल ठेलुहन कै गठ जोड लगी ।
 कइसेउ रामाइनि भई खतम घर का सम्पूरन पाप भगा
 मिलिहै न नरक मा इनँइ ठौर जो अपनउ का दइ रहे दगा ॥
 परिवार बढ़ति व्योपार धरम सब कुछ नौकर ते कग्वावै
 आपनि छवि देखे ते डेराँइ ना मरै जिअइ का कल-पावै ।
 मुल जानि गये सब सेठि भगत यू गमाइनि का फलु पाइनि
 चोरी करिवे की ढाल बनेउ अस राम तुमारे गुन गाइनि ॥
 आरती भई परसादु बटा हुइगे कुछ कै जूता गायब
 दुइसै रुपिया कै चपत लगी साहब छिन मा बनिगे नायव ।
 जस आखेटक कै मधुर गान जस खातिर सातिर डाकुन की
 तस रामायन का आयोजन माइक पर भीर पढाकुन की ॥



आवा परधानी का चुनाव

जब नइया सासन की डोली भकुरी जनता खीझें परान
 तउ आपन मुँह लुकबाबइ का गाँवन पर कसिकै धरिनि सान ।
 अखबार अकठ्ठइ बमकि उठे हुइहै परधानी का चुनाव
 मच्चि गयी खलभली गाँउ गाँउ बढिमा लतिहाउज, बढा चाउ ॥
 सब दौरि परे जस होइ गिद्ध सरकारी हुण्डी की खातिर
 सपने की दुनियाँ दौरि परी यहि भुँइ मुछमुडी की खातिर ।
 घर घर एकइ बतलानि होइ खेती पाती सब षट्ट भई
 बसि जौर रहि गई कूटनीति कपिला नथि कै हरट्ट भई ॥

हुइ गये ठाढ दम लाग बाँधि आपन आपन लइके निगान
कुरमी बाह्यन घोवी तेली रजपासी ठाकुर मुसलमान
सब आपनि आपनि जातिन कै मिलि आपन आपन व्वाट गिनिनि
जो लतमरुआ ना कहूँ रहँइ उइ व्वाटन खातिर व्वाट गिनिनि

जब निरबिरोध समझौता बदि पुरिखा कौनउ कुल वान कहँइ
सब बोलि परँइ उम्मेदवार हमरी ब्यागि चहुँ ओर बहइ
थुक्का फजिहति मा परि दरि छरि चुप साधि धरन का लौटि जाँइ
जो सन्निपात कै गोगी हँइ उल्टे बैदन पर बडबडाँइ

देखउ बोटर कै करामाति सबका परधान बनाइ रहा
कोउ लप्प लप्प चिलमै बारै कोउ ठर्रा मा गुन गाइ रहा ।
दीनू उधारि बखिया बोले बोइ दुसमुन हमरे बाबा कै
बनिगे परधान कहूँ जोखे हँइ जूता बिन पैताबा कै ।

कोउ कहइ कि मुरगा फँसा भोट कोउ कहै न सुनिवा रंच झूठ
हम ओट न दयाबै दिल्ला का नहिती मचि जइहै खुली लूट ।
बोइ रामदीन परदादन कै आपन सनबन्धु बताइ रहे
देहरी की धूरि लिहे डारँइ पानी अस रकम बहाइ रहे ।

काहू की लछिमी पर बीतइ कौनउ गुडई देखाइ रहा
कौनउ गप्पन मा पूर गाँउ सरगउ ते बाढ़ि बनाइ रहा ।
नौकरी देइ कोउ लरिकम का कोउ बेइमानी के गिनइ व्वाट
जइसे पाबइ उल्टा टेढी बहु सिरियान अस बसइ ग्वाट ॥

जब तीनि दौस का बखतु रहा दुइ परधानन मा लट्ठ चला
दुनहँ दल कै चालान भये बनि गई पुलिस कै भली भला ।
मटुकी फूटी सब खुली फोल अउ म्हाटी मा बहिगा पानी
कसकंधी रोटी जेलि भई यह पाइनि लच्छू परधानी ॥

तब पाँच पाँच सौ रुपिया दइ खिसियाति भये घर का आये
भंगारि परी हुइगा चुनाव पछिताइ रहे सब मुँह बाये ।
दुसमनी जुमाघिन की यहि बदि अबकी चुनाव मा पूरि भई
जाँ उड़ति रहँइ अरमासे मा उनको आसा सब धूरि भई ॥

जब आवा दौसु अलच्छन का दुइ अध्यापक अपसर आये
धूरे ते एक उमेदवार उनका घतिआइ गुपचि लाये ।
खटिया परि गइ कालीन विछी फिरि होइ लागि जमि कै खानिर
चौगिरदा घुघुआ अस बइठे बदमास इलाका कै सातिर ॥

जो पिहिनि नही वोइ छकिनि दूध बोनल पर दोतल खुलै लाग
सब प्रजातत्र कै परिपाटी करुई शराब मा घुलै लाग ।
जो रहँइ सिपाही होम गाट बेहोग भये भुँइ मा गिरिगे
जइ हाय भगीरथ गंगा कै मुँह खोलि नरदहा मा तिरिगे ॥

भनमारु भवा खग चहचहान सब पहुँचि गये विद्यालय मा
अस गलइ लागि जन तत्र देह जस पाँडव गलँड हिमालय मा ।
जिनके जेबन मा ओट रहँइ उइ खैर खाह भगवान चले
नेता या देउता धरती कै जगु जीतइ आजु किमान चले ॥

जेहिका खाइनि तेहिका गाइनि बेइमानी की चढ़ि बजी पारि
कुछ ओट खोंसिगे छपरा मा कुछ इंधी उंधी दिहिनि डारि ।
फिरि भर्र मारि घुसि गई भीर कइ सके न घरुआ होम गाट
गडबड मचि गा चलि गइ लाठी रुकिगा चुनाव उखरे कपाट ॥

चुआति तेलु जेहिके माथे गरिआइसि वकमु उठाइ लिहिसि
सब जीति हारि लइ भाजि परा कुछ कहिनि बहुत जहु नीक किहिसि
डारिसि माटी को तेल थोर बकसा मा आगि लगाइ दिहिसि
हिकमति बेइमानी अउ तिगड़भ छिन वित्तर माँहि जराइ दिहिसि ॥

हल्ला हुइगा वकसा फुँकिगा सब किटकिटान अपसर प्यादे
कुछ पकरेगे कुछ मारेगे कुछ फाँदि भजे नाला नाँधे ।
चालानु भवा यातना भई कुछ रोइ रोइ पछिताइ रहे
झडा हइ डोउति प्रजातंत्र सब कोमि रहे फलु पाइ रहे ॥

बोइ मौजन मा जो हुइ प्रधान घिउ चुपरी रोटी खाइ रहे
योजना प्रगति अनुदानन ते जेबन की जोति जराइ रहे ।



गाँवन के नेता

कुरता धोती खट्टर क्यार
रंग मटमइसो खेत न हार
भोर होति मुँह चूपरेइ तेल
राखँइ होम गाट ते मेल
यहि को लीचर ओहिकी सार
करतव गाँव के नेता क्यार
रोजु रम्भि कसबा का आवैं
सम्बी चौड़ी लौटि सुनावैं

काँधे पर लटकौआ झौरा
बसि बातन को भूँजइ होरा
पटवारिन के जइ हरकारा
आधे आधे को बटबारा
सब ज्ञानन मा दखल खखाइ
रहे सिपाही इनँइ बड़ाइ
जइ अँधरे धुँधरेन की आँखी
अति सुकुमार बिकाऊ साखी

चंदमा को इनके रंगु लाल
जइ एकइ मा तीनिउ काल
अति परभाउ जेब मा ओट
खाइ सिअइ की कहूँ न खोट

गँवई गाँवन केर मजूर

तीनि माह नेउतन मा काटे
लुच्ची कै लपसी अस चाटे ।
पइसा होइ त कलिया रोटी
नाँहि त होइ देबारी खोंटी ।
मिलई न जो गुपचै भिनसार
ताक न जानँइ करि व्यवहार ।
कौनउ नेक सलाह न मानँइ
सब ठगुअन का आपन जानँइ ।

कौनउ नाँहि चाह बलवान
बसि रोटी की पढ़ँइ पुरान ।
झुकी अँधेरिया चारिउ बार
पाइनि कथरिन ते न उबार ।
कूकुर और बिलइया गाबँइ
थके नीद मा जानि न पावँइ ।
कटइ दुपहरी बरगद तीर
जह चौपारि सुनइ सब पीर ।

लरिका माँगइ कुछ रिरिआइ
जइ कनकौआ देई कटाइ ।
आपनि आदति ते मजबूर
गँवई गाँवन केर मजूर ।
कटि गइ उभिर न सोचिनि और
कर मा फरुहा मुँह मा कौर ।



कसबा का रक्सा वाला

रोजु सलीमा देखह जाँइ
भ्रखेन घर लरिका चिल्लौइ ।
जो कौनउ देखइ मजबूरी
चारि गुनी भाखँइ मजदूरी ।
रहिबे का टीसन चौराह
मौका पाबँइ करँइ गुनाह ।
खाँइ पुलिस बालेन की मारु
नेता बलफँइ अत्याचारु ।
जइ अदिमी का परखँइ खूब
देखि उठक्कर दाबँइ दूब ।

सँझलौखे सब हीरो मात
इनकी बहुत बडी औकात ।
पाइ अँधेरिया होई जवान
इनकी अलग-थलग पहिचान ।
बहुत मुला धन ते मजबूर
रोटी के चक्कर मा चूर ।
जब धीदेवी गाना गावै
सिटिया हल्ला डारि बजावै ।

बीड़ी फूँकइ पेट करोइ
जानउ रक्सा वाला सोइ ।
जबरदत्त जानँइ रिरिआँइ
मुल कमजोर जानि गुराँइ ।

अब कै किसान की दुनियाँ

जरीकैन सइकिल मा बाँधे
डारे एक अँगौँछा काँधे ।
झोरा मा कटहर ओ आलू
सूखे बार पिआसो तालू ।
न्यूजिल और पिलिन्जर ढूँढइं
कामदार हुइ अपसर मूडँइ ।
बाबू जी कहि जीभ खियानी
प्रगति शील की यहै निशानी ।

पुलिस पिआदे अउरइ भाँखें
दूध दहिउ ना घर मा राखें ।
देखा देखी मा हुइ भिनके
पढँइ पूत कनवेन्ट म इनके ।
ट्रेक्टर कै करजा मा लदिगे
सूतइ देति जिन्दगी बदिगे ।
छाँडिनि बरगद केरी छाँही
सहर गाँव कै भइ गलबाँहीं ।

ताल करिनि मछरी व्योपार
यहु मुनु नवा दिहिसि सरकार ।
ठौरइ बठिया फूस लखाइ
छपरन बिजुरी बलब सोहाइ ।
दूध दुहँइ शहरन का लाबँइ
लरिका भिनकँइ माठा पावँइ ।
हीटर रोटी थकँइ बनाइ
शहर घुसे गाँवन मा जाइ ।
यह अब कै किसान की दुनियाँ
फूटी ढोल कसी हरमुनियाँ ।



कारीगर

रुपिया अस्सी रोज कमाँइ
भोर उठई अउ बासी खाँइ ।
नित अउरन के महल बनाबँइ
आपन छपरा माँहि विताबँइ ।
कन्नी बसुली आपनि हाथ
जइ निरमाता रहँइ अनाथ ।
पिअँइ धकाधक रोज शराब
जइ सजलौले केर नबाब ।
पइजामा पर पहिरि कमीज
जइ कारीगर जग नाचीज ।
इनँइ दिहिसि परमेसुर शापि
धकँइ पेट को गडहा नापि ।

हिन्दी के टीचर

लिहे सफेदी कपड़न कगार
मुँह ते झारँइ फूल हजार ।
ज्ञान होइ का लिहे मखर
लुजगुन बेही कहँइ हजूर ।
भीतर कोतरे उप्पर ठस
मजबूरी के ब्रह्मचर्य अस ।
गप्पन के राखँइ भंडार
तारा तोरइ नित्त हजार ।
टुटही रहे साइकिल ढोइ
राखै मरिमा पेट कखेइ ।
जो धोती तउ ढीली काँच
इनकी दुनियाँ शूठ न सँच ॥

गाँवन के छैल चिकनियाँ

पटरा का पैजामा धारे
उपपर लाल अँगौछा डारे ।
नेल रहा बारन चुचुआइ
छैल चिकनियाँ मेला जाइ ।
पानु खाइ बीड़ी सुलगावे
लिहे जलेबी घर का आवे ।
अँगौंड सुरमा आँखिन माँहि
बदि के पूरी आलू खाँहि ।
वजति ट्रान्जिस्टर जो होइ
इतते बड़ा म जग मा कोइ ।

लागि लनिक जो कच्ची होइ
तउ जह दुनियाँ सच्ची होइ ।
पाँउ डुबरिया पेटु मोटान
भिनकैइ घर मा शिशु नादान ।
इनके डाक्टर झोरी छाप
बने मरीजन बदि अभिशाप ।
मेला ठेला इनकी शान
जह मौतरिहा नये जवान ।

जइ मास्टर अँगरेजी क्यार

जब कौनउ अनपढ़ का पावँइ
तब अँगरेजी बोलि सुनाबँइ ।
दरजा मा नानी मरि जाइ
इनका कछू न आवइ जाइ ।
अँगरेजी कै लइ अखबार
जोर जोर वाँचइ बहु बार ।
पूँजी पति के देखइ ख्वाब
गँठे लरिकन माँहि रुआव ।
बहै गिरामर बहु अनुवाद
गूँजि रहा इनका जयनाद ।
दाढ़ी घिट्टई रोज सबेरे
आठौ याम लरिकबा घेरे ।
बाँवे घूमँइ कंठ लँगोट
निन्त क्रीज बदि घोटम घोट ।
जइ मास्टर अँगरेजी क्यार
इनके नखरा सहस हजार ।



बिआहु गाँव कै लरिकी का

जब ते कानन मा भनक परी बप्पा बिआहु तइ करि आये
 अस धक्क भई तब ते जिउमा लइ धुन्धि मनौ बादर छाये
 दिन राति सोचु जह डेहरी अब मइया बाबा कै छुटि जइहै
 काजर अम्मा की अँखिन का घर का दुलार सब लुटि जइहै ।
 जब बइठइ कबहुँ अकेले मा हँधि जाइ गरा अउ भरि आबइ
 अस बंधइ तार तब हुचकिन का नैनन मा सावन घिरि आबइ ।
 सरमन मा घर ते निकरइ ना मन की मन मा सब रहइ धरी
 जब दौस धनछुआ का आवा मेहरारुन ते भरि गइ बखरी ।

सरपच होंई परपंच होई जेहिके मन मा सो कहइ तौन
 उलरै महतारी को करेजु पाथर अस हमका गढ़ै मौन ।
 कइसेउ कोठरी ते बाहेर का बिटिया का सबै पकरि लायीं
 कोउ कहिसि कि ना सरमाउ बहुत गोफनी अस डेलु जकरि लायी
 मन का मसोसि देखइ घरती उप्पर न मूड़ उठाइ सकइ
 जो बरइ अगिनि भितरै भीतर खारा जल नाँहि बुझाइ सकइ
 बहु समउ फलांगति आइ गवा तहजद मनौ शुरुआति लिहे
 पति देउतन कै समुहें पुरानि आदसन की औकाति लिहे
 आई धूरे पर जो बरात दुइ लरिका गोला दागि दिहिन
 मन कै झुरान बाँधी टटिया दगतइ मानँउ दइ आगि दिहिन
 चलबीसी उथल पुथल हलचल का ऊहा पोह बखान करी
 जल अलि अस मानौ चित्तु भवा अधभीजी सिरजनहार घरी
 आई बरात आई बरात लरिका मनँई तमकै लागे
 अँगरेजी बाजा सुर काढ़िनि फिलमी गाना गमकै लागे
 शक्कर कोउ भरिसि डेलइया मा कोउ हाथे लइ गिलास दौरा
 भिल्लि यार दोस्त सहयोग किहिन गा गाँउ भूलि कोतिया भौरा

चिः माँगिनि बरतौनी बदि फिरि होइ साग तक्का तक्की
 दुइ दुइ रुपियन पर लडै लाग जो रहँइ तनिकु बक्की झक्की
 भा शिष्टाचार कलेवा भा बेलवा मडवा समघोर भवा
 अब बिदा करउ अब बिदा करउ चारिउ दारन ते शोर भवा
 हइ गाँवन मा अबहूँ रहि गइ मानवता के पहिचान थोरि
 जइ महानगर के साँपन अस ना फुफकारै कुलकानि बोरि
 आटा डेलवन मा लइ दौरा कोउ गोहूँ कोऊ दुइलहरी
 भरिसे बोरा सब जुटा गाँव लइ बिदा केरि पीड़ा गहरी
 रोबइ लागी डिडकारि मारि लरिकी ना तन का होस रहा
 मानँउ हइ कौनिउ गाज गिरी बाकी आँसुन का कोस रहा
 बप्पा पर लिपिटि परी बिटिया बप्पा हुचकिन मा समुझाइनि
 अम्मा अचेत हुइ भुँइ देखिनि लरिकी जलमें को सुख पाइनि
 अस लागि रहा धरती रोबइ, रोबँइ बिरबा नभ रोई रहा
 जह धरती किहिसि हइ कौन गजब धीरज हइ धीरज खोइ रहा ।
 बिटिया की पहिलि बिदाई मा पाथर कठिनाई का छाँडिसि
 नयनन मा उबलि परे झरना दुख भली भाँति यहि खन डँडिसि ।
 लरिकी पकरै तउ छाँडै ना सब भाँति भाँति समुझाई रहे
 जलिदही बिदा हुइके अइहो कहि पीरा और बढ़ाई रहे ।
 जब समुझार्ये न बनी बात तउ बलु कइके बैठारि दिहिन
 दुइ भाई करी जिउ कइके पालकी खोलि के डारि दिहनि ।
 धूरे के बाहेर भे कहार सब लौटे और पटाइ रहे
 मानँउ भगारि परी धरमा हुइ शिथिल अंग गुंगुआइ रहे ।
 कोई काहू ते बोलइ ना पाँयन ते रचँउ डोलइ ना
 का खइहँ पीहँइ औतरिहा यू थका भेदु अस खोलइ ना ।

जो लौटि पौटि के खबरि दिहिनि दूइ कोम मयक क रागीर
उइ बिटिया का राउतइ पाइनि ना जोपना पावन सँ इना-
कम बैस अठारह ते भइया ना लुकि को बिअरइ रमिअरइ
ना सौपि कसाई लोभिन का बिनु प्राणि जिन्यो भनि अरिअरइ ।
सतबन्धु बराबरि सा सोहइ कुल के मन्दाइ इतिअर अर
ना रुपिया के मरघट महिया भपनी बिटिया का मरउत मर
मुख मपना हइ जा प्रेम नही, जहि अन्ध बरख को मरइ मर
ओटे अकाम भुँइ का बिछाय मदभाउ जही हइ मरगु मरइ ।



तितुली आई

फूल फूल पर पाउ मझा
जहाँ तहाँ ते उड़ि उड़ि जाये ।
कारे विअरे ओर अजनी
रंग बिरंगे पथ देखाई ।

लरिकम का बज्जे भइ जाई
तितुली आई तितुली जाई ॥

कृति हइ कोमे कमाकार को
देवतइ रहइ जिन तनि देवइ ।
मुन्दरता की अचरअ सदरी
कवि ममरथ को है जो लेख ।

कोमकता की कोषकनाई
तितुली आई तितुली जाई ॥

फूल फूल से घूस उगाहै
थिर न कछ जग देखि उमाहै ।
लगइ प्रकृति के घर की बिटिया
नहुँ भरि माया सबइ ठगावै ।

भरइ दगन मा चंचलताई
तितुली आई तितुली आई ॥

देखतइ उड़इ जुरइ जिअराते
पइयाँ लागइ अम फुलबारी ।
पंखन मा छवि अमर लुकाये
हुलसई राजा और दिखारी ।

सीढिन चढ़ै मनौ विशुताई
तितुली आई तितुली आई ॥

बरखा रानी

अउरे जुग मा हुइहै बसन्त

कलजुग मा बरखा रानी हइ ।

अउरे जुग मा हुइहै बसन्त कलजुग मा बरखा रानी हइ
हइ राजि पाटि सब वहै ठौर जब भुँइ की चूनर घानी हइ
तपि रहा जेठ आगी बरसइ तरसइ जल का चिरई चुनगा
सूखइ लागे बिरई बिरवा देही मा निकरि परे सुनगा ।

भुँइ फटी बेमाई अस हुइ गइ अदिमी लरिका चित्लाइ लाग
भा ठाढ़ घामु आँखी फारे घुसि गये बिलन मा कार नाग
दुनियाँ अकास देखइ लागी कुत्तन की हफनी बढ़ै लाग
पाँचन मा झलका परे लाग खेपड़ी पर गरमी चढ़ै लाग ।

जब लुअँइ साँम उगिलइ लागी तब अद्रा आइ नखत गरजा
 धरती का झुकि चूमिसि बादर, बिरही बिधुरन का जिउ लरजा
 साउन राखी की किहे यादि दिन गिनै लागि बहिनी दुखिया
 जिनके घर सम्पति पिउ राजँइ हइ उनते कौन बड़ो सुखिया ।

पानी जीवन मा भेदु नही यहि बिन धरती नभ सब सूना
 यहि बिन बिरवा खेती पाती मरि जाँइ मरति जस हइ चूना
 दादुर मछरी कछुआ जोंकइ इनका सबका जल देउता हइ
 गोरू हरहा जलचर नभचर अठिलाँइ कि जइसे नेउता हइ ।

बरखा हइ तउ धन्धा करिया हइ बरखा तउ नदी नाला
 बरखा के रूठतइ डारि देइ सूखा मुँहिमा बडका ताला
 बरखा हइ तउ यहु देस सरगु जप जग्गि होंई बरखा हित
 हइ सूत कपास और धुनियाँ बरखा सुदेस के चरखा हित ।

बादर हुडदंग मचाइ रहे रहि रहि विजुरी चमकाइ रहे
 हँइ लुका छिपी के नये खेल सूरज का मनौ खेलाइ रहे
 कइ रहे पहाड़न की हँसि हँसि कहँ सेत वरन मलिहम पट्टी
 पसुरो परवत कहँ रहे सेकि उर बाँधे दहकति अस भट्टी ।

कोउ करै पलेवा खेतन मा कोउ घास धरे भीजति जाबड
 कोउ भँइसी लिहे चराइ रहा कोउ मन मा आबइ सो गाबइ
 सहरन मा बइठे दुकनदार अपने जिउ का हुलसाइ रहे
 बरखा रानी का विभव देखि आपुस मा चोंच लड़ाइ रहे ।

भुँइ का भगवान, किसान मुला बरखा पर टिकी किसानी हइ
 बरखा महतारी और घाप बरखा रानी महरानी हइ
 भादा घासन की खपडी पर मुकुटन का बूँद लजाइ रहे
 आपनि बहिनी लहरन का उठि आँखी चमकाइ बोलाइ रहे ।

हुहि सुरभि पालकी घर सवार तब लौ गौने बदि आइ गई
 चपला-गुड़िया कै माथे पर अनखा अस मनौ लगाइ गई
 बगुलन की सुधर अल्पना भइ मेढकन की साँचु जल्पना भइ
 इन्दर धनुहाँ का लिहे हाथ यह भुँइ की सफल कल्पना भइ ।

x

x

x

आल्हा गाबँइ कजरी गाबँइ कुछ चुअति भये छप्पर छानी
 सब परे गिरे ऊसर बंजर हुइगे जवान पाइनि पानी
 कहँ लोटः बँधिगे आटा मा कहँ लकरी डँगरी गर्यो भीजि
 कोउ बगिया केरि मड़इया मा टबका जमुनन पर रहा रीक्षि ।

सागर जइसे लहराँइ ताल चितवँइ सबका आँखी काहे
 बगुला मछरी के चिन्तन मा हँइ एक पाँउ कबते ठाहे
 हुइके स्वतंत्र सब घास फूस मारग सिगरे हइ लिहिसि झाँपि
 जइमे गुप चुप लइ लइ सुरःग खोफिया चोरन का लेइ छापि ।

•

तीसरि साखि गंडुआ होइ

अधिरत्ता मा पी के आबें
 धड़पड़ करि साँकर खटकावें ।
 पुरिखन केरि कमाई खाँइ
 दुइ पइसा ना भूलि कमाँइ ।
 पिअँइ शराब निकारँइ गारी
 बिलखँइ बाप और महतारी ।
 ठकुर सोहाती कहइ सो थार
 इनते बड़ा कौन हुशियार ।
 भये नरक चौदासि अस गेह
 मँगिहै भीख न कुछ सन्देह ।

और न कुछ लरिका पइहँ
 होटलन केरि पलेटइ धोइहँ ।
 मगरे बुद्धा भिम्मा जौन
 इनते बड़ा निकम्मा कौन ।



लादे बेसरमो का माँस
 नगह करइ इनका उपहास ।
 करिनि महाभारत निज गेह
 बची अकहुला मा बसि खेह ।
 लरिकी लरिका कहूँ क जाँइ
 जइ अपने मा मस्न लखाँइ ।
 गलत करँइ अउ मानँइ ठीक
 यहै सुघर माया की लीक ।

खपरे के दुइ पइमा वोरिनि
 झूठे नखत अकास के तोरिनि ।
 जो इनके समुहें ममुहाँइ
 अगिली कोलिया मा कटि जाँइ ।
 अपने करमन रहे घिनाइ
 इज्जति आपनि रहे छिनाइ ।
 दुपहर तक सोवँइ जइ तानि
 निकरी आँखी लेगड़ी बानि ।
 आपन करनी आप वखान
 आलस अउ घमण्ड की खान ।
 सब के पाप थकँइ नित डोइ
 देंँ दान गव आँसुन रोइ ।
 कहत पुरोहित की सब कोइ
 तीसरि साखि गबुआ होइ ।

इनसे राम छोडावइ जान
 जइ मक्कर करि सोवँइ तान ।

मीरा बनीं

बहु पीर नरासिबे की सहि कै चमकी दमकी बनि हीरा कनी
उडिगै मनो नीद चिरैया तना अगुनी निधनी जो न प्रेम धनी
वह और है आँखि जो देखि सकै अधियार म जोति तकै दुगनी
घर ते जग ते न वनी जब ती गुन गाइ के श्याम कै मीरा बनी ।

पायेन जो पगसादु सनेह का काल भये सब मंग संघाती
मै बिष कै घरिया भोपना रद पीसि रही कुलकानि की धाती
धूरि भई सब राजि औ पाटि जो श्याम के हौ रंग मा रंगगती
पी के सबै सदमस्त भये मुल मीरा बिना पिये हँइ मदमाती ।

देह के भूली सबै सुधि ती नित राह निहारि अधीरा भई
कान्ह के आँखिन रूप भरे भई पागल प्रेम गंभीरा भई
भई नाद सुधारस ते बढि कै नही डोलक नाँहि मँजीरा भई
मन मा मनमोहन शेष रहे बिष भा मधु, सादर मीरा भई ।

प्रेम के भूरि प्रभाउ महा जग जीवन कै सब भेद भुलाने
बूडि गये सो लगे ओहि पार जो पार लगे मँझधार पराने
छूटि परे परिवार के बन्धन मानुष मूढ कहँइ पगलाने
मीरा समाइ गयीं घनश्याम मा मीरा म हँइ घनश्याम समाने ।



शहरातू विद्यार्थी

भूत भविष्य रथ ना जानैह
 खुद का बहुत अकिञ्जा जानैह ।
 पढ़ लिखइ या जिन ना जानै
 दिनु खड़ि भाई नथ कहुँ जानै ।
 लठ अविकलि का फुटहा पाव
 नकल सहारा इनका मात्र ।
 छाती की सब बटनैह खोलै
 टांगइ जम कीर्तनियाँ डोलै ।

बीड़ी मिगरेट पान बाराथ
 जइ हई होटलन केर नवाथ ।
 टिक्सन पूता बंड मंधाइ
 जइ दुबरे आवरी खवाइ ।
 कमर मध्य कहां अनि मौहइ
 छः इची चाकू मन मौहइ ।
 कलजुग भा बहु बरतुर मुर्जान
 फरा बरइ अउ शोबइ तनि ।

सेट वारन औ सोहई बटसे
 मेघनाथ के पुतग जइरो ।
 विद्यालय के चारिउ ओर
 हइ सिदिया बाजी का जोर ।
 ई नाजुक ता देह म ताव
 बाजी दली आह कै रवाव ।
 माता पिता न कौडी मोल
 ना इतिहास न हइ सुगोल ।

झूठ साच की मूरति अइसे
 भुंजे बड़कवा भाँटा जइसे ।
 स्कूटर ते मूतइ जाँइ
 महतारी का घर धरि खाँइ ।
 जइ मजनु की हँइ मन्तान
 इनका भला करइ भगवान ।



नई रोशनी के दस्तूर

पहिले पहल शहर का जाँइ
 बीड़ी फूँकँइ पान चबाँइ ।
 सड़क छाँडि कोलिया तक देखँइ
 मत मा औरइ अन्वरजु लेखँइ ।
 जानँइ घर के बड़े पक्कीस
 मुल्ल जइ गुंडा बर्नइ खबीस ।
 आँटा बेचँइ पिक्चर जाँइ
 दरजा मा नहिँ कबौ देखँइ ।
 देखुआ आबँइ निन्त दुआरे
 जइ कालेज के राज दुलारे ।
 दइजा माँगइ साठि हजार
 बनहै डिपटी पूतु हमार ।
 कहँइ बाप का अपन मजूर
 नई रोशनी के दस्तूर ।
 प्रगत्तिसील की जह तस्वीर
 लटी दुदहँडी सरा पनीर ।



मरी चकबन्दी भई

जनसंख्या बढ़ि रही दिनौ दिन मिक्किडि गई सब खेती हूइ जाइ रही अइसे किसान ते जस मुट्टी की रेती हूइ चकबन्दी जुआँ की नाल मरी चकबन्दी भई ।

कुछ जमीन चकरोट म निकरी थोरी बारी खोट म निकरी रिसबति केर न जो बैसाखी थोरी खुन्स कि ओट म निकरी हूँइ मारिनि हाथु दलाल मरी चकबन्दी भई ।

दौरति दौरति पाँइ पिगाने पहुँचेन तई न ठीक ठिकाने बाजी गर अस भीर लगाबई मछरी खुदइ किनारे आबई पटबारी भये मालामाल मरी चकबन्दी भई ।

ऊँचा खेतु ताल मा पहुँचा ठेलुहन केर जाल मा पहुँचा पेसकार तारीख बढ़ावै दस तकझारै और बतावै कसाइन कै कुत्ता अस हाल मरी चकबन्दी भई ।

कुछ गरीब इज्जतिउ गँवाइनि दुखिया खेती तहूँ न पाइनि पेसकार मिलि हबस बुझाइनि डाली उप्पर तक पहुँचाइनि अस फैलाइनि जाल मरी चकबन्दी भई ।

बहुत बढ़ारी भुँइ पर बइठे चतुर सिआने घूमई अँइठे सी.ओ. ते ए.सी.ओ वत्तर खन्ती मा रिसबति की पइठे हूँइ किसानऊ हलाल मरी चकबन्दी भई ।

रिसबति दइ किसान हूँइ खाली डाकू दुखी लुटेरे सोंचैइ राखिसि रंच न हूइ चकबन्दी थाने निसुसँइ खम्भा नोचँइ रहा बूडि मरइ का ताल मरी चकबन्दी भई ।

मरी चकबन्दी भई ।

मुशायरा

हँइ होइ लाग कवि सम्मेलन सब नगर भक्षिकन मा जब ते
 कुछ दिन मसोसि मन रहे मुला चलि परे मुसैरा हँइ तब ते
 यू मानिति ना उर्दू भाखा वसि इन मुल्लन की भाखा हँइ
 ई आपनि बपदाई जानै यू कब ते इनका ध्वाखा हँइ
 आनन्द नरायन मुल्ला हँइ, हँइ जहाँ ठाढ रघुपति सहाय
 चकवस्त कि जिनके आगे सब ई मुल्ला लागति लल्लबाय
 इनका निकारि या तउ किरतन या मासूकी कै झगडा हँइ
 कुछ उरझे जीवन के मवाल बाकी लटका हँइ रुगडा हँइ
 हमहूँ देखी का होनि हुंआ यहि वदि सबै लौखे पहुँचि गयेन
 देखेन मुरगा चिंचिआइ रहे लखि लाल परी डेरभुते भयेन
 दुइ सायर जिनके साथे मा दुइ लौंडा देखेन गोर गोर
 अदधी अस पहिरे टहलि रहे नग जड़ी अंगूठी पोर-पोर
 कोउ कहइ सरग कै गिलमा हँइ सायर संघइ मा डोरिआये
 कोउ कहइ नाँगुड़ा चेला हँइ ओस्तादन का हँइ पछुआये
 हँइ सायर बहू जो छाँड़ि लीक कुछ नये ढंग का अपनावै
 जो हँइ तेली का बैल कवितई के न भूलि बहु ढिंग आवै
 सागिदं धरम अउ विद्या मा कवितई न गुरुडम का मानँइ
 सायरी न जातइ दुनिय्या का बसि आपन अन्तर का जानँइ
 सायरी नही हँइ गोट एक सायरी न खेल खेलौना हँइ
 सायरी जहाँ पर ताकि रहा जगदीश्वर बनि कै बौना हँइ ।

कोउ पहिरि शेरवानी आवा लटकाये लम्बा जार बन्द
कोउ सुरमा काने लगु ओगे तुरक टोपी पहिरे बुलन्द
ब्रातन ते मिसिरी घोटि घोरि बसि उर्दू की जय जय बोलैइ
कोउ घडी साज कोउ जिन्द साज मुल कथा नवाबी की खोलैइ ।

कोउ बेंचि कवाबु रहा देखेन काँधे पर बगुचा ढोउति कोउ
कोउ मोटर कपार मकैनिक हइ कोउ चुरिया बेचइ सायर सोउ
कोउ खड़ा कचहरी मा दिनु भरि दइ ताल पुकार लगाइ रहा
हइ बहउ सायरन मा बइठा जो बेचि पतग कमाइ रहा ।

कथा चाटै चूना चाटै ना कबहुँ वरोबरि करि पावै
हाथन मा उगिला पान लिहे बइठे मंचन पर मुँह बावै
कौनउ का चाय के कुल्हड़ मा मचइ पर शूकति हम देखेन
कौनउ की पीक चुरई उप्पर गफलति मा चूकति हम देखेन ।

कुछ विरहाकुल हइ रोइ रहे बसि उनकै यहइ सायरी हइ
कोउ प्रेम पत्र अम बाँचि रहा हाथे मा लिहे डायरी हइ
दुइ चार नजम अउ गजल छाँड़ि कुछ और न जोदन मा गाइनि
नाजुकता का या जुलफन का या तौ आँसुन का अपनाइनि ।

कुछ बीचइ मा चिल्लाइ परँइ जो चाह करइ की बदि बइठे
सायर ते बदि के अरथु काढि सबदन के सागर मा पइठे
कुछ झूमि रहे कुछ उचकि रहे कुछ बढाबइ बदि बइठे
कुछ भूसा कै उप्पर बछरा की खाल चढाबइ बदि बइठे ।

दुनियाँ का सबसे बडा बनाइनि संचालक जेहिका सायर
बहु आवा माइक के समुहें जस कौनउ-होइ दगा टायर
आपुस मा छीठाकसी करँइ कुछ आये बनि कै व्यंगकार
बीबी का टूटी साइकिल कहि भौँहँइ मटकावै धुँआधार ।

कुछ ऐचा नाना गाइ रहे बसि तुकबन्दी कै चक्कर मा
पढतइ आधा पण्डाल रहा जिउ हमरउ फँसा उटक्कर मा
चिल्लाइ परे सब फेकरि परे यू सबसे नीकी सेर कहिसि
हइ रहा मुसलमानन परजो बसि भारत मा अँक्रे कहिसि ।

बहु कहिसि की आपन देसइ मा यू लागति आजु पराये हन
हइ लरिकन अस आदति हमार हन खाये मुस अनखाये हन
कोउ एकइसेर पढ़इ फिरि फिरि भरि भरि अलाप मुँह बाड बाइ
कहुँ ऊँची करइ अबाज और कहुँ भिनकि सुनाबइ सुर दबाइ ।

पानी मा भीजि डवलरोटी अस जिउ सव श्रोतन का हइगा
कुछ टुकडा रहिगे बीडी के कुछ कुल्हड़ और न कुछ छुइगा
हम पल्लुआर कथा सुनिके हन अइवे बदि पछिताइ रहे
जइ बहुत जुगाधिन ते एकइ गाथा गजलन मा गाइ रहे ।

दोहे

धरम बीज हइ खेत का राजनीति हइ अन्न
एक भ्रूण हइ कोखि का छकि पय हुआ टन्न ।
वर्तमान की चाह हइ राजनीति की चाल
धरम ग्वाट अति दूर की स्वारथ और बबाल ।
मानुष भुँइ पर आइ कै जब सोचिसि बहुकाल
अटल राजि की बदि चलिसि, सम्प्रदाय की चाल ।
कहि के खतरा मा धरम पण्डित कोढ़े काम
करौ रारि बलफै धरम, धरमी नमक हराम ।
जब लौ खतरा मा धरम मठाधीश की सान
आगि लगावहि अन्यथा हरहि सुमति कै प्रान ।
राजनीति या खल-धरम हँइ कलजुग के सस्त्र
मठाधीश नेता दुऔ बिन इनके निरवस्त्र ।
सँचि साधु न आइहै राजनीति के गाँउ
जनि बूझि को डारिहै इन कटिन या पाँउ ।

सहज भरोसा नकल का हुलसै बुद्धि ललाम
 आपनि राह बनाइबो बड़ो सयानो काम ।
 सरी लासि अब धरम की ढोबँइ मुल्ला सन्त
 कहँ निसाना हइ लगा हइ निगाह कहँ अन्न ।
 माया की जकड़नि यहै पकरि न छाँड़ै गेह
 रहइ काहिली संग लइ मोह दर्प सन्देह ।
 धरमी की संगति भली औ बरगद की छॉह
 बखरी चौडी राह की, बर विवेक की बाँह ।
 पुलिस कबी अउ टहलुई बूढी होइ छिनारि
 इन चारिउ ते भूलिहू ना करिअउ तकरारि ।
 राह होइ परदेस की तम बरात या सार
 सेवउ नही एकन्त का हर जवान जो नार ।
 बैस जवानी संग तिय और नसेड़ी बान
 होइ पुजागी अस जहाँ हइ आफति की खान ।
 परइ कचहरी फंग मा अउ सराब की बानि
 हाइ कर्ज को खाइबो गयी मनौ कुल कानि ।
 बौडम मधुपायी जहाँ बंधइ मरकहा बंल
 नारि कुलच्छनि पाँव रिपु भूलि न पकरो गैल ।
 साथ साथ जुग के चलइ बहै मनुज हुशियार
 जो जुग के आगे चलइ सो जुग को सरदार ।
 समय-समय की बात हइ मित्र शत्रु नहीं कोय
 जौन पतुरिया की दसा राजनीति की सोय ।
 चिरजीवी बहु कवि रहा वहै भवा सरनाम
 मारिसि घर का लात कहि चूल्हे मिआँ सलाम ।
 बिना जगाये न जगै सोबँइ लम्बी तान
 दास-छात्र बदि नीद असि भला करै भगवान ।
 छेड़ँइ लरिका नित्त मुल कहर न उनका कोय
 लरिकिन का बदि कै कहइ पुरुष वर्ग अस होय ।
 अदिमी केतनों हूँ करँइ नित्त विनौने काम ।
 नारि रहइ संकोच मा तबहूँ नित बदनाम ।

मिलइ बात बसा कर्न उजला नातेदार
 मूरख होइ दहेज की जौन करै दम्कार
 भुंइ पर आसा की बसइ जह मानुष की जाति
 जगति रहइ उलझन बुनइ होइ दीन या राति
 पूजा करउ करोर तुम सुख ना पइहौ भूल
 जब लौ मन ना रोकिहौ यह पूजा की मूल
 ज्ञान गैस की रोगनी बुद्धि नर्तका मान
 नृप समाज दस इन्द्रियाँ यह रहस्य को जान
 उचकि चलइ बोलइ मधुर सोभन गोरी देह
 आँखिन बाहेर करिअई भूलि न लाबउ मेह
 यार मदकची कवि कबौ दूरी ते न डेराँइ
 चुल भेटइ की बदि अपनि नदी पैरि के जाँइ
 जानि लेई मिलिहै अगर रोटी साँझ सकार
 कामु निकम्मा ना करै सोबँड पाँउ पसार ।
 कुछ मानुष के भेस मा घूमि रहे हैं बैल
 बेमन कुछ करिहै नही मन ते खोदिहैं सैल
 भट्टी दहकै धरम की चुरै नीति की दारि
 राजनीति की लौडिया धरमा धरै उतारि ।
 सुअरी अस जनता चहै मरि मरि के चिल्लाइ
 कामु न नेता आइहै अनखाये अनखाय ।
 अंगस बंगस पाँउ अरु देखउ श्यामल गात
 जौन कहइ चुप हुइ सुनउ सुखी रहउ दिन रात ।
 पुलिस मोहकमा मा सदा जातइ परिचय देउ
 नई तउ गारी खाइहौ लइ सहपटही टेउ ।
 लरिका नित भूखेन भरँइ दुलहिन काटइ रोय
 चन्दा ते कफफन जुरइ असिल सराबी सोय ।
 सभा या कि दफतर कहुँ सोचि समुझि के जाउ
 सिटिर पिटिर मा जो परेउ कर मीजे पछिताउ ।
 ठकुर सोहाती बदि कहउ काम परै पर बात
 नाँहि त घर बइठे रहउ करम कोसि दिन रात ।

गुन प्रकटाये ही बने औगुन राखी गोय
 पीटि ढिंदोरा जो सकइ चतुर गुनी हइ सोय ।
 बोल बोलकड श्याम रग मोटी घीच लखाय
 उप्पर ते जो पेटु बड समुझौ कुसल न आय ।
 अधिकारी ते बदि मिलउ पहिले जानउ टेउ
 नक्षेपण रसमय अगर तुरत सफलता लेउ ।
 दुइ जातिन के जोग ते अगर जो जातक होइ
 या तउ कुल दीपक बने या कुल देइ डुबोइ ।
 जानि सकै को नर समय, कब बनि जइहै बात
 निज विवेक का राखि कै करौ दोष पर घात ।
 सीखइ सुधरइ बदि नही कबौं होति हइ देर
 भोर भये निशि बीतिहै पुनि छँटिहै अन्वेर ।
 अगर वडप्पनु और का तुमका अंगीकार
 आँखिन ते परदा करौ यहू घूँघट का सार ।
 घूँघट हीन असभ्य नँहि सम्य घूँघट माँहि
 व्यउहारन ते मेहरुआ सम्य असम्य लखाँहि ।
 राजा मंत्री बैद अरु मित्र अगर मिलि जाइ
 पीर बताये ही बने बाढै बिपति छिपाइ ।
 जो न कबहुँ चोरी करै खुद ते अपन विचार
 वहै सराहा जाति हइ जगदीश्वर कै द्वार ।
 तेल खून की रारि मा मानवता अकुलानि
 फिरि फिरि पकरिसि नर वहै महायुद्ध कै बानि ।
 आपन मत जग पर लदै यहै युद्ध कै हेतु
 भला करिनि कब भूमि का कहउ राहु औ केतु ।
 जडमति सुत ते हइ भला सदा निपूता बाप
 दुख बउने सब जगत कै बड़ा गेह परिताप ।
 पाथर ना बौड़इँ बढइँ सींचउ लाख करो
 धुआं होति कब हइ जलद नाहक करिहौ रोर ।

जड़मति ते खुजा भला कथइ भागि कै दोष
 परजीवी हइ एक तउ, अन्य भिजारै कोष ।
 राउ चाउ मा दिनु कटइ सनकइ जइसे बैल
 लुसि कन्या बातइ सुनइ नसै समूचां गैल ।
 मुरची पर को बैठिबो अउ मँगिबे की बान
 एक दिन राति कराइहै सुमुखि गवँइहै मान ।
 एकतउ दोसरि और पुनि होइ चमकनी तारि
 धीच धरे धूमइ मनौ तर नगी तरवारि ।
 चुगली चाइ नित करै बाला राखइ बात
 चीरि भीर पहिले लडइ मुसकी मा उतपात ।

कुण्डलियाँ

खोंटा सिक्का सहज गति चलइ चलन मा रोज
 राह चलति अति भजेन को घिसि घिसि सेटइ खोज ।
 घिसि घिसि सेटइ खोज न तीके अब रहि जइहैं
 आपन चारिउ वार निरखि जब खोटे पइहैं ।
 होइ झूठ या साँच अकड़ ना चलइ बहुत दिन
 ठौर ठौर जब काँच पाँउ की भलगति पल छिन ॥

पलई साँचि ना बड़इ पादप कबहुँ - अशोक
 पातो मा छाया निरखि उडइ रात दिन कोक ।
 उडइ रात दिन कोक न साँची कोकी पइहै
 जब लौ भ्रम करि दूरि अपनवौ ना बिसरइहै ।
 अहै ज्ञान की बात न जब लौ स्वारथ जइहै
 मारग अन्टइ सन्टे दुचित मानुष अपतइहै ॥

बगुला ते मनर बने चलैइ हस की चाल
 डोली तर छिनरा भये बिपति भई ससुराल ।
 बिपति भई ससुराल वहु सकट मा परि गइ
 रच न साबुत बची दारि बटुली मा जरि गइ ।
 धीर धरो सत्र लोग लौटि अब बहु दिनु अइहै
 भलमंसी कै बीज न कहूँ खोजे मिलि पइहै ॥

रोला

स्वारथ पकरिसि जोर क्रोध की भडकइ ज्वाला
 घेरिसि हिंसा गेह अघो गज हइ मतवाला ।
 मिला न खोजे पन्थु बड़ा औरइ अंधियारा
 हारि गवा सब ठौर जौन नर मनते हारा ॥

कुण्डलियाँ

पेन्सलीन जानइ नही ऊँच नीच व्यवहार
 सबका एकसै गुन करै बाह्यन डोम चमार ।
 बाह्यन डोम चमार एक सबके हित गाड़ी
 चली अगर तौ चली चाँहि टीसन पर ठाढ़ी ।
 चहुँ सुमति मन माँहि लीक पकरख विज्ञानी
 करख शक्ति की खोजे शक्ति हइ अवदर दाजी ॥

कविताई-उर जोरि कै भरइ काठ मा प्राण
 तन्कातनी स्वाहा करइ, झूठि करइ अभिमान ।
 दूरि करइ अभिमान न कविता भित्ति बनावै
 छन्द और परबन्ध चहै जोहिमा चलि आवै ।
 हाँचा या तुकताक, हइ यह कौनउ वाद नहिं
 उर कै सूघो बानि, अखबाशी अनुवाद नहिं ॥

रोला

शक्ति न दीजउ भूलि बाँदर का विज्ञान की
नेता यहिका पाइ राह देइ समझान की ।
पीठी पर का घाउ मुला कप्पार म सेकँड
राजनीति की आगि फरी बगिया मा फेकँड ॥

गिरि परिहौ भराइ मोट गरुई उठाइ कै
हुइहौ पागल बादि शान झूठी बनाइ कै
कहौ वहै हौ जौन न आगे चलि पछितइहौ
झूठे बनहौ हंस उघरि कै बहुत लजइहौ

वहै बना भगवान जो न खटा मँझघार ते
सुखी किनारा पाइ दूरि भवा हर धार ते ।
ढोइसि बल्ली बाँस बिछाइसि दरा उमिरि भरि
बना आजु लौ दास नरक मा वहै रहा सरि ॥



कुण्डलियाँ

मछरी चिन्तन कह रहे सब विभाग यहि काल
नेता हाकिम छोट बड़ सबइ भये घरियाल ।
सबइ भये घरियाल टोट बगुला अस मारें
नोचँड भूत भविष्य देस गड़हा मा डारें ।
कारन यहै देखान भले का बदलिसि खोंटा
फरे बड़कवा बिरिछ भवा मरकिचिया छोटा ।

नारा बाजी चढ़ि बजी दाबि साँचु कै बानि
काँच केर टुकड़ा भये बफलि रतन धन खानि
बफलि रतन धन खान न पाइनि रंचउ बोइ जन
हंडी दिहिन सुखाइ गँवाइनि जो तन मन धन
काजरु लिहिन निकारि भये दृग उबली घुइयाँ
नेता गरजे बहुत न मुल बरसाइनि फुइयाँ

चतुराई भलि जगत मा जो मतलब भरि होइ
 राजि पाटि लरिका गये चतुराई मा खोइ ।
 चतुराई मा खोइ भये धृतराष्ट्र घिनउने
 हाथ रहा पछिताउ अति चतुर मानुष बउने ।
 सुतरमुर्ग मरि जाइ गाड़ि खपड़ी मट्टी मा
 कौआ चतुर कहाइ टोंट मारइ टट्टी मा ।

गिरइ केरि सीमा नही उठिबे को नहि छोर
 शक्ति अपरबल मनुज की सीमित खग मृग ढोर ।
 सीमित खग मृग ढोर नीद अउ भूख बुद्धि बल
 परवस धारे प्रान न राखँइ रंच कपट छल ।
 जह मानुष की जाति विधाता थाह न पावै
 सहै कोख की पीर और खुद का उपजावै ।



कवि सम्मेलन

रुपिया पइसा ते अरस भये कुछ व्योपारी हिलि मिलि बइठे
 ठेलुहन का चही मनोरंजन जो गेसि कवितई मा पइठे
 तुकबन्द भये दुइ संजोजक कवि सम्मेलन मिस लगी घात
 बनि गई कमेटी और भवा चन्दा अघाइ फिरि अकसमात ।

संजोजक रहँइ मियान जौन बोइ चिट्टी पत्री डारि दिहिनि
 कवि माँगि लिहिनि बीसन हजार बटिया चन्दा की पारि दिहिनि
 तनि मोल भाउ करि आठ जने सम्मेलन मा बोलबाये गे
 अउ एक भदरसा मा सब कवि फिर भली भाँति ठहरायेगे ।

दुइ जने मुला लरिकी जवान देखिन साथे मा डोरिआये
 पूछेन तउ बीले कवयित्री हम् कियेन खुशामदि हँइ लाये
 कोइ अलग थलग कमरा चाही जेहिमा जह लरिकी लेटि सकै
 सब लाज सरम अउ धमकच्चर अठलककह बिना समेटि सकै ।

तब अलग अलग फरमाइसि भइ कोउ दूधु गुनगुना कोउ पानी
कोउ काफ़ी कौनउ चाय पिहिसि कोउ बलफिसि अपनि हैरानी
कोउ छानि भाँग झूमइ बइठा खइनी खाये रम चूसि रहा
कोउ बियर पिअइ कोउ रम भिसकी कोउ गरम समोसा ठूसि रहा

तन माटी का जिउ मस्ती का पछितई सरग तुलसी कबीर
कुछ का मन अटका बोललमा कुछ हँइ अफोम की बदि अधीर
बेतुकी छेड़ जेहिते तेहिते हुइ धुत्त नसा मा करइ लाग
भीतरै भीतर जब सुरा चढ़ी तउ काम अगिनि अस बरइ लाग

सब की गइ बुद्धि हेराइ मंच पर गये झूमतै ज्ञामति फिर
कविता के बदले चौबोला ना और रही औचापति फिर
कुछ एकइ कविता लौटि पौटि कुछ नवा बदलि के भाँइ दिहिनि
कुछ आँखिन ते कुछ हाथन ते कुछ कूदि फाँदि समुझाइ दिहिनि

हुइ गये तीस लगु वरस न बदली उनकी एकइ कविता हइ
कुछ जोड़ तोड़ कइके निम्नइ हिन्दी मंचन के सविता हइ
परिवर्तन का जग पुतरा हइ इनकी कविता हइ ज्यों की त्यों
जूता चप्पल लगु जाँइ बदलि मुल जह अगगासे की अस बौ ।

भाँपू कुल्हड़ हुल्लड़ हुबका सनकी बौड़म कवि साँइ भये
जब कविता ते न हँसाइ सके तउ वने विदूषक भाँइ भये
कोउ महापुरुष का दइ गारी कसिकै हुल्लड़ मचिआइ रहे
कोउ करुण कहानी के प्रसंग चिघाँड़ि दहाड़ि सुनाइ रहे ।

रेशम मा बोरा की चकती कवितई भाँग की पुड़िया हइ
कुछ कवि हँइ जिनका छुटपन ते बसि कविता की नँहबुड़िया हइ
कविता कइके रहिहौ निरोग हइ बैद दिहिसि कौनउ सलाह
कवितई बिना जइहौ घिनाइ गैलल बनिहउ हुइहौ तवाह ।

कुछ सबद जोरि तिगड़म के बल केबल जइ नित मंचन पर गाइ रहे
दिन दूने राति चौमुने जइ मुल असिली कवि सुरझाइ रहे
कोउ कहइ कि प्रेम प्रसंग कही कोउ कहइ कि चुम्पे बइठ रह्यौ
मुम अन्ट अन्ट केउनर अन्ट अन्ट केउनर अन्ट मा पठठ ज्यो ।

आपनि चठिया मा डोलि रहे सब आपुस मा जय बोलि रहे
 उल्लू धुधुआ इक दूजे की तारीफन मा रसु घोलि रहे
 कुछ जैसी और रोटरी के बनिये व्योपारी मिलि आये
 संघड मा आपनि मेहरारू लगिका लरिकी सब डोरिआये ।

कोउ बासी अखबारी भाषण तुकबन्दी किहे सुनाइ रहा
 कोउ सम्प्रदाय के कीचड़ मा कविता का खँचि बहाइ रहा
 कोउ सूधे सूधे लतिहाउज करि रहा देस के नेता का
 कोउ खदर का घिनबाइ रहा कोउ जोरि दिहिसि अभिनेता का ।

काहू के कविता और नही हिन्दू मुसलिम की खाई हइ
 टी० बी० बी० बी० लौ काहू की कविताई चलिके आई हइ
 कोउ ओढ़ि लबादा हिन्दी का आपनि बिल्डिंग बनाइ रहे
 नरकउ मा मिलिहै ठौर नही बजगी जो देस कराइ रहे ।

कोउ भाउ बिना भरि भरि अलाप सुरताल बनाइ गिसाइ रहा
 कोउ अँइचा ताना जोरि जाइ हइ गरा दबाये गाइ रहा
 जइ भाखा के परचारक हँइ लगिका कनबेन्टी ज्ञान लिहे
 ई चमडी ते करिया हँइ मुल भीतर अँगरेजी जान लिहे ।

जइ हँइ कविता के व्योपारी नित बेचि रहे ईमान धरम
 मइले अस भये चरित्तर हँइ हिन्दी के फूटति जाति करम
 कवि रंडिन ते बत्तर हइगे जस चहौ राति भर नचबाबउ
 इनकी पइसा ने यारी हइ चँहि सुनौ या कि मुँह मटकाबउ ।

रंडी की कीमति पाँचइ सौ बसि राति भरे की दुरगति के
 जइ चारि हजार उगाहि रहे मंचीच जोकरी कीरति के
 हँइ मंच ताल के जइ नीरज जेहि भाषा मा पाइनि गाइनि
 लटके कब ते बनि के त्रिशंकु कौनउ भाषा ना अपनाइनि ।

बिन नोये लगनी गइया अस जह कविता बडी दुधारू हइ
 हइ रही करामाती मलिहम या नकली ढोला मारू हइ
 दुइ चारि पाठ के बादि मंच की कविता होति पुरानी हइ
 जह सयोजक की मिली भगति जह जनता की नादानी हइ ।

हड़ होती सहायक इनहूँ की खाली तौ कौनउ रेट नहीं
 मानुष हड़ कविता का मन्दर जेहिने कौनउ विधि भेट नहीं
 टायम सब सफरै मा श्रीतइ साधना होइ सब गाड़ी मा
 ना कविता कबहुँ सुनाइ परै हमकी धडकनि मा नाखी मा ।

जब सम्मेलन हड़ गवा खतम रुपियन की धमा चौकड़ी भइ
 कोउ रुठि चला कोउ लिहिसि वाहि मूड़े ते आँवी तगड़ी भइ
 निसुसै असिली कवि कोने मा सोपण सहि सहि रहि रहे मौन
 अब तौ दादुर बोलिहैं मंतर तुलसी बाबा की सुनै कौन ।

हँइ माल-हिरन कै आखेटक कुछ घिसे पिटे कवि बेरि बेरि
 कव सुनिहौ कवि की नात मुला माता कानन का तुम उटेरि ।



जइ गवाला सब इनते मात

रंच न दूध के डेब्बा भटके
 हिंडल के खँदनन मा अटके ।
 पाछे दुअउ ओर दुइ बाँधे
 सइकिल गरुई खँचइ राधे ।
 मोर होत खन दूध बटोरँइ
 किलो निन्ते चालिस लगु जोरँइ ।
 दुपहरिया मा शहर क आवँ
 एकल पसीना एक बन्तवँ ।

यहै जिदगरी का हड़ कोउ
 तारकोल की पिचलइ रोड ।
 दूधइ बँचति कटि गइ वैस
 दुखिया कबहुँ न जानिसि ऐस ।

चौखाना का लहमद बाँधे
 पेटु खलाये लगंड बिआधे ।
 हलबाइन ते यारी होइ
 लगनी भेंस दुधारी होइ ।
 फटइ दूध ठाढी तकरार
 गहर मुसकी व्यंग हजार ।

गाँउ भरे मा करि नेउताड
 बोई झारें लौंग बनाइ ।
 दन्द फन्द मा जइ हुशियार
 हरि अबिकलि के दावेदार ।
 बीडी विलम जहाँ मिलि जाइ
 जिउ हुलसइ मन मोदक पाइ ।
 बड़ी दूध ते इनकी वात
 जइ ग्वाला सब इनते मात ।

ओ ओटर भइया

ओ ओटर भइया हमने न रिसवति खाई ।
 स्वारथ मा अफसर ना माने
 हमरे अड्डा बनिगे थाने
 करैन बहुत हम नाही नाही
 बेइमानी कीन्हिसि गलबाही
 खिरकी डगर हमारे पाछे घरमा डाली आई ।
 तिकड़म की चौमासी गंग
 चारिउ बार मिला तर तंग
 बोले गलत अगर ना करिहौ
 तउ अगिले चुनाव मा हरिहौ
 डूबि जाइ की खातिर कइसे उलटा नाउ चलाई ।

जइसेइ जीप ते बाहेर आयेन
 चापलूस कुछ हाहे पायेन
 बेग लिहिनि हाथे मा अपने
 पूर भये बनि उनके सपने
 दलालन केरी सूब भई ठकुराई ।
 जीने दुखिया दग बिछाइनि
 दौरि धूपि के राजि देबाइनि
 दुइ धक्कन मा पीछे रहिगे
 मेहनति नीति घरम सब बहिगे
 पांच लाख जब खर्चु करी तत्र हम एम.पी. हुइ पाई ।
 जब मंथिन ते कामु करायेन
 बिना चौथि के पार न पायेन
 लरिकी का बिआहु कइ डारेन
 साठि हजार गिफ्ट मा मारेन
 काहु ते मंगिन ना कबहुँ कहौ त कसमें खाई ।
 ओ ओटर भइया ।

डाकून की बनि आई

कौनउ पिछड़ा बरगु लिहे हइ
 सरग लिहे अपबरगु लिहे हइ
 लिहे सबद मा समता कौनउ
 अउ जनता बदि समता कौनउ
 झूठ मूठ पंजाब कि कौनउ हाथ लिहे अगुआई ।
 कौनउ हइ माफिया सरचना
 राजि बनी मूरख का सपना
 लिहे बाबरी महजिद कौनउ
 जह जिद कौनउ बह जिद कौनउ
 कहिका ज्वट देइ अब जनता सब की मति चकराई ।

जातिवाद के समीकरण मा
 अउ स्वार्थ के कधीकरण मा
 कौनउ लिहे कमंडल घूमइ
 कौनउ लइके मंडल घूमइ
 मंगरेहइ केहिका अब जनता डाकुन की बनि आई ।

कोउ इमाम का नित्त पटावै
 अल्प संख्यकन का भरमावै
 कौनउ राम रहीम क ज्वारइ
 कोउ रहीम ते नाता त्वारइ
 चारिउ वार देखान ग्रहै बिध हमका ठाढ़ कसाई ।

देखि रहे सब आपनि कुरसी
 जनता केरि देह हइ बुरसी
 हँमइ बिदेगी धाउ दइ नवा
 रोष और कुछ और हइ दवा
 हाँउ फेकाँउ यहै रातौ दिन का कहि ब्वाट बनाई ।
 डाकुन की बनि आई ।

देहाती बाबा

धूरे पर भिठिया के तीर
 बहइ महकुई जहाँ समीर ।
 बाबा एक गाँउ मा आइ
 लइनि फूस की कुटी बनाइ ।
 सेंठा दिहिसि और कोउ बाँस
 बाबा की पूरन भइ आस ।

भारत के तिरथ का हाल
 साँझ सबेरे कर्षई सुकाल ।
 आँटा पाबँइ ठिक्कर सँकँइ
 बिना बात की बातइ फेंकँइ ।

देर राति जगु चठिया जोरँइ
 चिलम मदक कै रस मा बोरँइ ।
 छोलि अगौरा जो सहँताइ
 पी कै घरइ तमाखू जाइ ।
 लटइ घुआनी त्रिनठे वार
 हइ चिमटा इनका हथियार ।
 गुगुआनी आँखी दुइ गोल
 खैचि निकारँइ मुँह ते बोल ।
 चमत्कार कहूँ देई देखाइ
 बनँइ ठडेसुर औसर पाइ ।
 गाँउ भरे का नित उठि ज्ञान
 कुछ नउमुडा बघारँइ मान ।

जाड़न भरि धूनी का तापँइ
 भसम लगावै बादरु नापँइ ।
 बरड चिलम जिनकी ना लम्प
 हँसी उड़इ तिनकी बनि गुप्प ।
 कौनउ रसु इनका दइ जाइ
 मई और धोउना हइ चाइ ।
 इनके बदि अगरासन बाढ़ँइ
 उनके लरिका जुग-जुग बाढ़ँइ ।
 फूँक डरावँइ होइ बेराम
 बाबा रिबत्ता मा सरनाम ।
 उल्टे सूधे भजन सुनाइ
 मेहरारुन का लेहँ रिझाइ ।
 कहँइ कबीर सुनउ भइ साधौ
 सब बाबा का मिलि आराधौ ।



दोहे

दकियानूसी मा परो सम्प्रदाय की जौन
बहुत काल लगीहै नही नसिहै कुनवा तौन ।
सम्प्रदाय की बानि हइ नित भेड़िया घसान
अनुभव भिन्न, न हइ कबौ, आतम पंथ समान ।
काम परे पर सोइबो अगर कुलच्छनु होइ
लछिमी जी गुस्सा रहँइ सदा कटँइ दिन रोइ ।
नित फकीरन बदि चही मधुर बानि अउ सील
कपड़ा पूरे जमन कै बमि आतम की कील ।
बादर मा बूड़इ अगर नखत लगति दिन सूर्य
बग्वा को बदि कै बजै तेहि पखबाग तूर्य ।
हइ चरित्र बल हीन जो रहा कुलच्छनु डोइ
हीन जगत व्योहार जो सदा अनादर होइ ।

गरीबी न पापर बेलइ

सूखे सबै दिन ओंठ रहे
सिकुडा मनौ खाल बहोरि चुकी हइ ।
लेस औ पोत दबाई बिना
रस प्राण को वात निचोरि चुकी हइ ।
पाछे तपेदिक अइमी परी
सब घातन घोंच मरोरि चुकी हइ ।
जीवन तार ते तोरि हमै
जह रौटी सबै घट फोरि चुकी हइ ।

देखति का हौ निहारि हमै
दुख-देवता को सदा वन्दना गायेन
खालिस लोन निरा मिरचा
सदा पानी के घूटन रौटी नँघायेन
हुइहैं कहूँ बने राजा ग्धी
हम तउ लरिका मजदूर बनायेन
कौन भवा जनै पापु महा
कबौँ आँसुन ते अवकास न पायेन

दोसु बड़ा इन हाथन मी
छुइ जाँइ जहाँ बहु पाछे ढकेलइ ।
लौकिउ जो कहूँ बोयेन तउ
गिरि मा छपरा जिउ की भई जेलइ ।
साध यहै रही जीवन मा
कबौँ खाइ अघाइ केँ छोकरा खेलइ ।
और सबै दुख आवै मुला
अव-आइ गरीबी न पापर बेलइ ।



नींद कहीं कँकरीली जमीन पे

कान परा जहु एक दिना
मजदूरन के दिन लौटि के अइहैं ।
लेनिन माओ के दूत अब
जुग ते बिगरी जो हमारि बनइहैं ।
मालिक हुइ मजदूर सब
इन सेठिन का परबन्धु सिखइहैं ।
लंघेन का लछिमी मिलिहैं अब
वैभव के उनें साँप न खइहैं ।

एकन केर उजागर हुइ सब
एम मरै भितरै न जनावैं ।
एक के आँसू बहैं सब देखत
एक बिथा मन मा उफनावैं ।
चिन्ता है एक की कैसे बनी चिता
दूसरे की चिता चिन्ता सजावैं ।
पावैं न एक कबौ भलो भोजन
पावैं जो एक पचाइ न पावैं ।

नींद कहीं भजै फूल की सेज पे
नींद कहीं कँकरीली जमीन पे ।
हाथ कहीं निशिवासर फोत पे
हाथ कहीं रहै आरा मशीन पे ।
एक सड़ भये सेब से भीतर
बाहेर एक हैं कौड़ी के तीन पे ।
हुँइ दुख देव दुआँ पे लमे
जेतनो धनी पे ओतनो धनहीन पे ।

यहि ते कबहुँ न लड़िअउ भूलि

काजरु ओंगइ बार संभारइ
 नखत तोरि कै भुँइ मा डारइ ।
 सहइ अजाने की मजबूरी
 आदति तंगी खरी मजूरी ।
 जेहि पर तनिकउ जह दिक्काइ
 भजति तुरन्तइ पुलिस क जाइ ।
 मुसकी मारइ अउ चिल्लाइ
 भलमंसी देखे बिरुलाइ ।
 गढइ बात रोजुइ दुइ ढूँढि
 रही जवानी दिन मा मूडि ।

बड़बोली ना जग ते छोट
 चिकनी बातइ लूट खसोट
 कौनउ यहिका मिलइ न अन्त
 धर धर काँपइ देखे सन्त
 सुन्दरता की मूरति जानइ
 खुद का सती कलजुगी मानइ
 का भजाल कौनउ कहि जाइ
 लतमरुआ हुइ मारी खाइ ।

पुलिस म तेहिका जाइ डँडावइ
 आपुस मा गुंडा लड़बावइ ।
 रंच न यहिकी जग मा घीति
 फेना अस हइ यहिकी श्रीति ।
 घन का टबका अईस निच्चारइ
 देइ न पैरइ बिलकुल ब्वारइ ।
 सब ते बाला यहि की बात
 यहि ते हइ परमेसुर स्रष्ट ।

जो यहिकी तन तनि समहाइ
 हुइ चहला की ईटइ जाइ ।
 जौन लडै पाछे पछिताइ
 जब लौं जिअइ जिअति मर जाइ ।
 लुकुरी फूस के जौरे केरि
 बूढे बिधुरन केरि महेरि ।
 गुन्डन मा गुण्डा सरदार
 आह भरँइ मुछ मुण्डा यार ।
 पास परोसी सबै डेरँइ
 करँइ डंडवत अउ हटि जाँइ ।

अनखतरी घाघन की घाघ
 ओंठ बनाबइ पाये दाघ ।
 अस्त्र दलालन का मजबूत
 यहि का बलु तुम गिनउ अकूत ।
 भोर विलोकइ तौन घिनाइ
 और छुये दुइ बेर न खाइ ।
 यहि ते कबहुँ न लडिअउ भुलि
 नई तौ तुमका देहइ हूलि ।



भुँइ माता

चन्दा मामा की करनी अब लगु तुम हमें बतायेउ
 अब भुँइ को हाल बतावउ जग कालिह हमें समुझायेउ
 अगासे माँ न उड़ति हँइ कस जीव जन्तु पर ठाढ़े
 कइसे अवनी हइ बाँधे सब बाँधे नेह मा गाढ़े
 नसते परलय के जलमी तब समुझाइसि महतारी
 हइ बारिधि बाप की बिटिया अउ अहै सम्भु की सारी
 विसनू भगवान की लरिकी हइ सूत मूल ते पहिले
 सुख देइ सकल प्रानिन का खुद शेलि रही दुख अहिले
 नित रहि रहि महक उडावै कइ सूरज की पइकरमा
 महतारी की महतारी जह गाइ प्रभू के घरमा
 बछरा गिरिराज हिमालय जो बचै दूधु सब बाँटे
 राखी बाँधबाबइ को बदि चन्दरमा चक्कर काटे ।
 चहि जेतनी चलँइ कुल्हाड़ी चहि जेतना चीरँइ फारँइ
 चहि खोदँइ चहलै पाटे चहि जो धमकच्चरु डारँइ
 मूरित मुल एक छमा की जह नितइ लगनी गइया
 जह देइ सँदेसा सबका मानइ जह जग का भइया ।
 अपने तन सब का खँचइ जह जलम लेति बैठरइ
 लखि भाँति भाँति के लरिका ना जह कबहूँ मन मारइ
 पतझर मा बनि के बुढ़िया जग का निरबेदु पढ़ाबइ
 बनि मधुरितुमा महकुइया अभिनव सिंगारु सजाबइ ।
 सब भाँति भाँति के सपने जस जौन वहै बिधि देखइ
 नित पाठ नेह का दइ कै सुख जिअइ यहै बर लेखइ
 सीता माता का धरे दुख जनम जनम कै टारँइ
 चप जग्य कीहँ तउ पभित्त घरती के पाँच पखारँइ

पाथर मा प्रान लुकाये गौतम तिय रहइ बिचारी
 रज बनी राम की मंझुआ पाथर ते कीन्हिसि नारी
 भुँइ जोन फूल उपजाबइ पहिरंइ नर उनकी माला
 बलि पन्थिन का पहिराबै सोषण का काढि देवाला ।

जब मानुष भीरी डारंइ भुँइ आशिवादि लुटाबइ
 लरिका लरिकिन बदि अपनी छाती दिन राति कुटाबइ
 हइ अन्न धन्न की जननी मानुष कै करम थली है
 जह हइ असिली महतारी अउ ममता की पुतली है ।

जब पाँउ छुअइ चन्द्रमा रोजुइ दरबाजे आबइ
 आँखिन का काजर बहिनी अनखा मिस भाल लगाबइ
 करउँट लेतइ खन छिन मा दुख बाँटइ हाला डोला
 तब खण्डहर केर सुरन मा गाबंइ परेत चौबोला
 निज पूजन की उन्नति ते कवहूँ ना हिम्मति हरिहैं
 लुंजा लेंगड़ा अँधरन का जिउ ते सनेहु नित करिहैं ।



जइ कृषी समर कै जोधा

बिरहिन के जिउ अस तलिया छाती मा चिटका डारंइ
 जब सविता आगी उगिलंइ घामे ते खपडी फारंइ
 भ्रम देखि तुमारो बिरवा हटकटे रंच ना डोलंइ
 देही ते चुअइ पसीना भुँइ के देउता रस घोरंइ ।

तक तक बाँ बाँ बसि चीरइ दुपहरिया का सन्नाटा
 ठउरइ पर ठाढ़ि उखारी मारइ दुख का दुइ चाँटा
 मूडे मा बाँधि अँसौछा हाथे मा लिहे पनेठी
 जग का जो अन्न खवाबइ सब लखंइ दीठि ते हँठी ।

बिन भूख पिआस जुटा हई यू घरती का लासानी
 खेतइ मा लाइ पिआबै मलिकिनि दुपहर मा पानी
 गरमी जाडा अउ बरखा देहीं पर अपनि बितावै
 जब बढति फसल का देखइ रहि रहि जिउ का हुलसावै
 बिल्लाई पसू घामे ते तजि घास छाँह का भाजँइ
 खेती कै सिह मुला जइ मौसम का रौंदँइ गाजँइ
 जब शहरातू कूलर मा आपनि दुपहरिया काटँइ
 किसनऊ पेट कै गड़हा लइ हाथ मठेई पाटँइ
 श्रम की सम्पति के राजा बैलन का चारा डारँइ
 सुरजन का फिरि जलु दइके पेटन के मूसे मारँइ
 जब थमइ घाम भँसिन का गौतलिपन मा नहबाबँइ
 रुपियन की चाह निसाचरि घिउ बेचँइ माठा पाबँइ
 जो चहै लेइ करि इनकी झलकति पसुरिन की गिनती
 खेतँइ हँइ इनके ईसुर श्रम की इकलौती बिनती
 जइ देउता साँचि जोगी नित करम करँइ सुख पाबँइ
 जब घरी दुइ घरी बैठँइ बरखा मा आल्हा गाबँइ
 झींगुर झिल्ली झंकारँइ नेतन अस दादुर बोलीइ
 छपरा ते पानी टपकइ रस और घरैतिन घोरँइ
 जब खूँड लिहे जइ आबँइ शहरन मा बेचइ आपन
 तउ जाड़ा गर्मी बरखा मारँइ इनका निज सापन
 खुद बिकँइ हाट मा महे मुल बेचँइ छुट्टी पाबँइ
 डल्लप होतइ खन पिन्चर राहइ मा राति बिताबँइ
 ट्रकटर ट्राली कै पुरजा बनबाउति समउ नसावै
 मिसतिरी मजूरी दूनी इनका समुझाइ बतावै
 हँइ बैंक खजाना इनके कुछ दुकनदार सहरन के
 उनकी बिजनिस् के सोता बीइ नेता इन अँधरम के

जब देखेंइ ई सब ठगुआ तउ कहेंइ सेठ जी आबउ
 आपन नौकर ते बोलेंइ पंखा की चाल बढावउ
 जइ हेंइ दधीच के लरिका इनकी हइ अजब कहानी
 ना चलइ रितुन की इन पर हठ कइके कुछ मनमानी
 जइ समउ भरेंइ अंगुरी मा भगवानउ इनका मानइ
 चीरेंइ धरती की छाती पथु जानेंइ चाह न जानेंइ ।

जब निकरेंइ घर ते बहिरो तउ बैलि देखि हूँकारेंइ
 छुटपन मा उछरति बछरा पायेन मा डुम्मी मारेंइ
 दुइ पायेन पर हुइ ठाढ़े बकरा तब आँखी काढ़ेंइ
 लौकी कुम्हड़न के विरवा छपरन पर बौड़ेंइ बढेंइ
 दोसरि हइ इनकी दुनियाँ फसलेंइ हेंइ इनकी कविता
 जइ कृषी समर के जोधा धरती के राजा पविता ।

अइसे बना आधुनिक नेता

कक्षा दस मा पहुँचा लरिका जब सपलीमेन्ट्री आइ गयी
 गुंडा गर्दो की चौखटि पर अगिली कक्षा पहुँचाइ गयी ।
 फस्टियर भवा रेस्टियर और पढ़िबे बदि नानी सरै लाग
 सिटिया बाजी नेतागीरी परि के संगति मा फरै लाग ।
 घंठन के बाईकट किहिस्सि घूमइ लाग जारे जमाति
 हेंइ ठाढ़ गाढ़ चहबच्चा मा थह है कुसंग की करामति ।
 बौड़ी सिगरेट सुलका शरौब धीरे धीरे रौटीन बने
 बसि देही मा हाँडइ देखान घूमइ मुल छाती खोलि तने ।
 कुछ सड़क छाप लस्किन से मिलि नारा दुइ चारि लगाइ दिहिनि
 फिर एक दौस घंटी अपनैइ नौकर का झिड़कि बजाइ दिहिनि
 दादा हुइमे नेता हुइमे बिद्यार्थी छाँड़ि सबे हुइमे
 आवा इण्टर का इन्तहान करिया अच्छर ना दुइ छुइमे ।

धमकाइ दुबेरिया टिचरन का कइ खुली नकल हुइ गये पास
मइया बी० ए० मा पहुँचि गये लइके सिच्छा कै यहु विकास
गाइडउ धरिनि मुल मिला नहीं कौनउ उत्तर जब हई ते
तउ कुछ औरन ते लिखबाइनि आँसी बड़खरि भई मूडे ते

जब छात्र संघ का बंधा जोर जइ अध्यक्षी मा ठाँइ भये
नेता गीरी की जुगति हेतु कुछ घाघ बने कुछ राइ भये
चढि गये दुकान दुकानन पर अउ लिहिनि हजारन मा बसुलि
होटल वाले माँगिनि पइसा गारी दस दइके दिहिनि हूलि

गाड़ी बस और सलीमा सब दिन पइसा के अपने हुइगे
परिवार देस औ' सिच्छा के बिन श्रम सच्चि सपने हुइगे
जीतइ वालेन के संग भये जब जुरा चुनावन का मेला
जानति सब ना यू पार लगी बिन गुंडन के रेलम पेला

कुछ गरम रकत कुछ नरम रकत कुछ मार मार कुछ नरे नरे
हुइ यहु चुनाव का दंगल अस या हँइ डाकुन कै दिन बहुरे
नेतन कै बनि के पिछलग्गू गठजोड़ किहिनि अगिली सीढ़ी
कइ रस्साकसी अलच्छन मा कुरसी मा लाइ धरिनि पीढ़ी

उनके विरोध मा जौन डटे दस बीस कतल करबाइनि फिरि
मिलिके हाकिम हुक्कामन ते आपन कब्जा भरबाइनि फिरि
अब लाज फूफ पहिंइ कपड़ा हुइ गये कसाई के कुत्ता
स्वारथ की भुँइ मा अनगिनती सोषण कै उमे कुकुरमुत्ता

बसि रहा जाति का समीकरण बाकी सब मुद्दा भये फेल
सिद्धान्त और आदर्श देस देखिनि छिन बित्तर माहि रेल
सौपउ न सँधि सकँइ इनका मुल जइ काँटइ तउ जहर चढ़इ
हुइ जीभ जिहे छुरिया इतकी मंचन पर भाषण रोज गढ़इ

यू मानिति हन सिगरो तलाउ हुइ सका न हुइ अब हँ गन्दर
मुल कमलन का मिस्कि दाबि लिहिनि जलकुंभी कै मोरख धन्धा
बिसबाबु यहाँ हरिआई तौ पाथर के नीचे दूब कभी
हुइ बेसइ का बेना बिसादि अक पदरँ अहिवा यौन कभी

हर नियम ज्ञान का अटल रहा यू नीचे ते उप्पर आबइ
जब आगी चारिउ बार होइ तउ को आँखी मीचे पाबइ
हिन्दुन की खालइ जइ खँइचँइ जब मुल्लन की जमाति पावँ
जब हिन्दुन की पावँ जमाति मूधे मुल्लन का गरिआवँ ।

बातन का करें बतंगड़ जइ चींटी कै बिल मा करें फार
मक्कारी पुलिस दलाली छल रिसबति इनके हँइ चारि यार
हँइ सबद सहद लिपटे इनके विष मनौ दूध कै दाँत लिहे
हइ दाढी इनके पेटे मा ई अन्त हीन हँइ आँत लिहे ।

जइ धरम करम का घिनवाइनि रंडी कइ डारिनि राजनीति
जइ पइसा ते वरु ठाँइ करिनि साँचउ कानो बरु लिहिसि जीति
जइ न्यायालय का हुड़बंगँइ जइ अनुशासन का करँइ भंग
जइ हवामहल जइ उजरे तन जइ मइले मन जइ बड़े नंग ।

बनिये व्योपारी अधिकारी सब स्वारथ मा पाछे घूमँइ
नेता समाज कै करनधार इनके चरमन का सब चूमँइ
दिन का जइ राति बताइ रहे जइ फरा फरा दिन राति चरँइ
भूखे पेटन पर मारि लात जइ निन्त गरीबी डूरि करँइ ।

जइ भये खरोचनि कलजुग की जइ धँसी धरम की परिभाषा
जइ सपना गान्धी बाबा कै जइ भारत की उजरी आसा ।

मास्टर हुइगे

गंवडंगावन के रहवैया कइ मिडिल पास मास्टर हुइगे
कुछ हाई स्कूल और इण्टर मुल अच्छर छर हुइ सब धुइगे
बर्धा भैसिन की सघति मा जो यादि रहा सो यादि रहा
खेती पाती के घन्वा मा मुल नित्त मदरसा बादि रहा

उठि परे भोर हरे नांदन पर पशु बांधिनि अउ हर मचिआइनि
दस बीस हराई जोति जाति दस बजे तलकु छुट्टी पाइनि
घर का लौटंइ देहीं मिजबंइ फिरि उल्टा सूधा भरेंइ पेटु
दिन भरे केरि दिनचर्या अस जस कसा कुल्हाड़ी बीच बेटु

जब गये मदरसा हफिफ डफिफ लरिकन ते बोले करौ काम
थकि गयेन बहुत हम घरहें मा आपन पढ़ि पढ़ि कै करौ नाम
बोलेउ तउ डंडा घरा ठौर दुपहर मा सरबतु लइ आयेउ
थोरेइ दिन रहे परिच्छा के नांहित तुम जनेउ फलु पायेउ

फिरि काढ़ि चुनौटी जेवे ते अनमोल तमाखू मलइ लाभ
दुइ चारि और मास्टर मिलि कै बातन के फागुन फरइ लाग
गइ बिठिया भाजि फलनवाँ की बन्वा की गाइ दुघारू हइ
हइ गाँउ भरे की राजनीति निम्न्दा की असिली दारू हइ

भा इन्टरबलु तुम घरै जाउ तब एक जने चिल्लाइ परे
कोरी पाटी पनिहाँ बोदिका सूखी कलमें रहि गये घरे
दहगर्दा सरबतु दुइ लोटा चेलन के घर ते घुरि आवा
बिन पढ़े बनौ ज्ञानी लरिकउ यहु आशिर्वादि उतरि आवा

हँइ संसद मा पसरे एम० पी० नित नई नीति चलबाइ रहे
मुल हियाँ रसातल मा सिच्छक सिगरी सिच्छा पहुँचाइ रहे
ई मुखजरु ओढ़े इस्पेटर मोटर साइक्लि तै आवति हँइ
सिच्छे क मन्दिर मा लरिकउ उइ रोज नदारद धावति हँइ

जो बहुत करिनि इमला बोलिनि करि ठाढ पहाडा रटबाइनि
पाटी पर कइके कुछ गुटका विद्या कै गड़हा पटबाइनि
जो इस्पेटर का मिले गुरु जइ उनकी जेब खखोइ लिहिनि
बिन किये धरे डिपटी का दइ सन्तोष करिनि सुख सोइ लिहिनि ।

कोउ किहे दुकान किताबन की पी कै शराव गरिआइ रहा
कोउ नेतागीरी मा घूमइ कोउ पुलिम दलाली खाइ रहा
कोउ बैठि जीप पर काहू की कइ रहा चुनावन का प्रचार
रोशनी करेजे मा गडे नित बाँटि रहा हइ अंधकार ।

हइ प्रगति भई कुछ इनहूँ मा जुग धारा मा हँइ जइउ बहे
जइ खेतिहर नेता अउ सब कुछ मुल अध्यापक ना रंच रहे ।
उप्पर ते नीचे लगु बिगरी रामइ जो चहँ बनाइ सकै
अब रामउ भरधर कलजुग मा देखउ कब छुी पाइ सकँ ।

उइ लरिका खाली घूमि रहे जो इंट देस की नीव क्यार
जो हँइ माटी कै लोंदा अस ठगि रहे उनँइ हँइ रंगे स्यार ।
अंधरे भविष्य की लकुटी जो, हँइ दिया अध की छाती कै
जो हँइ सनेह बिन कसमसाति, जो लउ हँइ टुटही बाती कै ।

उइ लरिका खाली घूमि रहे जो भुँइ के पके खजाना हँइ
हँइ जौन गुरु मा कुभकार उनते तौ भल सुलताना हँइ ।
डाकून के काटँइ कान नित्त जो नई जमनँइ हथिआवँइ
तिगडम की जिन्द्रा मूरति अस जइ लज सरम सब ठुकरावँइ ।

मरसिया पढँइ जइ विद्यालय इनके जिउँ का हँइ रहे रोइ
जइ अगिली पछिली वर्तमान तीनिउ साखिन का रहे घोइ ।
जो लरिका घरँ घरँ ते चलिकँ विद्या पढिबे बदि आवति हँइ
उइ सुरजन की गर्दन कटि गइ यहु सपना निन्तइ पावति हँइ ।

आकाश धरा मा कहँ होउ तउ आपन सर सधान करउ
अध्यापक सुधरँइ देस बनइ कुछ अइस जनन भगवान करउ ।



फुलमतिया का दिन भरि काम

धरि जमी पायन पर मोट
 पैहिदे एक जाधिया छोट ।
 लीखइ चमकई बिनठे बार
 जूरा फटी किनारी क्यार ।
 बनियानो मा छेद तमाम
 मइली जइसे धुरहा चाम ।
 चट्टी कबहुँ न पइनि गोड
 पंडरोहे अस चुये करोड़ ।
 जह गरीब की बिटिया जाति
 माँछी पायन धरि धरि खाति ।

नींद सरे आँखिन मा गाढ़ि
 डारिसि जानँउ कौनउ डौंढि
 यहिके बदि न बने स्कूल
 अदिन गिनइ दुनियाँ करि भूल
 बेरि बेरि सुडकइ अस नाक
 घर मा गंजी रहइ जस लाँक ।
 झुके झुके लगबाबइ धान
 जमुहाई अउ सुख परान ।
 जाइत सिकुड़इ मोबर बीनइ
 जबरदस्त यहिका श्रम छीनइ ।

नाक बहति पाथर भइ सुखि
 भई हैउतहरि पसुरी दुखि ।
 कोइला रागे मुसकुर लल
 रहि रहि खजुरी करइ बेहाल ।
 थकइ खोड़हिला झौरी लाइ
 उप्पर ते घर भरि अनखाइ ।

भेदु अजब राखइ लुकवाइ
 देखइ कबहुँ न पलक उठाइ ।
 दस पइसा का नाक म फूल
 जेहि की खाली कवि कै शूल ।
 सूधी लेइ न कौनउ नाम
 फुलमतिया का दिनु भरि काम ।
 अइहै कबहुँ न प्रगति धंधाइ
 मनु स्वतंत्रता केर भटाइ ।

अनखा कबहुँ ब पाइसि माथ
 समता ममता दुअउ अनाथ ।
 जह उन्नति की खोलइ लाज
 यहि बदि कौनउ साज न बाज ।
 विश्व बालिका वर्ष मनाइ
 मानुष खुद का रहा हैसाइ ।
 दुखी जगत का यहू अधियार
 जानइ कब पइहै भिनसार ।

कवि की कलम न अब लिखि पड़है

लुजगुन आँसू - गीत मरघटी
कवि की कलम न अब लिखि पड़है ।

एक ओर कश्मीर जरि रहा दोहरे शासन की मारन ते
भागि लिखति पंजाब देस की लपटन ते अउ अंगारन ते
भेदु डारि एकज देह का खोजुइ भाषा काटि रही है
सम्प्रदाय की जह परिपाटी भाई भाई बाँटि रही है ।

जब लौ खतम न होति देखइहैं
सुलगति कुरुक्षेत्र जइ सारे
तब लौ भोस कामिनी कंचन
कवि की कलम न अब लिखि पड़है ।

जो हमारि जह चाह कलिन घर पीर न फटकइ आँच न आवे
जो हमारि जह चाह रक्त की कौनउ होरी खेलि न पावै
जो हमारि जह चाह कि भारत वहाँ कबुत्तर फेरि उड़ावै
जो हमारि जह चाह कि अदिमी ओँठन पर मुसकान सजावै

जिअति रहँइ जो चाहति आपन
हीरा उगिलति सपन कुआरे
तउ जह हँसी मसखरी कविता
कवि की कलम न अब लिखि पड़है ।

जब डोली का ढोबइ बाले हँइ दुलहिन पर घात लगाये
मछरी-कुरसी के चिन्तन मा सरम धरम आदर्श चबाये
बहू जरँइ दस बीस देस मा नित रोबँइ अखबार बिचारे
आसी आजु तत्क ना पाइनि परे अकहुला राम सहारे

यह भारत का जोरड़ बाले
जब लौ सफल न हुईहैं नारे
निरमानन का छाँड़ि न तब लौ
कवि की कलम न अब लिखि पड़है ।

अइयाशी काहिली ओढि कै हम यहु देस गुलाम बनायेन
पहिदि न पायेन आपन जूता भोग भोगि कै राजि गँवायेन
आँखी ओँठन को बरनन करि कवि कविता को रूप सजाइनि
आपूस मा तकरारि देखि कै गोरे आये पाँउ जय.इनि

जब लौ छँटि के साफ न हुईहैं
जातिवाद के बादर कारे
रीतिकाल अस ठकुरमोहाली
कवि की कलम न अब लिखि पड़हैं ।

पण्डित का उल्टा समझाउति मुल्लन का भड़काउति देखेन
बनी रहइ उनकी बपदाई यहि बदि आगि लगाउति देखेन
फूट डारि के राजि करइ की फिरि योजना रही बनि भैया
स्वारथ के सब पाठ घिनउने उइ खाला हम लगनी गइया ।

मरिहैं सिक्ख न हिन्दू मरिहैं
मरिहै जइ इन्सान बिचारे
छाँड़ि खौरहा मुघर यथारथ
कवि की कलम न अब लिखि पड़हैं ।

जब लौ जानि न पाइति हन यहु कविता ते रोटी ना मिलिहै
जब लौ जानि न पाइति हन हम कविता बिता सुमन ना लिखिहै
कविता जीवन पंथु बतइहै आँधी का पायल पहिदइहै
जो कमाइ की खानिअ अइहै बहु कविता की छाँह न पड़है ।

जब लौ लौटि न आइति हन हम
अपने आँखन आपन दुआरे
लचर सबद घुंघरुन की रुनडान
कवि की कलम न अब लिखि पड़है ।

लड़ै जाति से जाति

जब कुर्सी की दौर मा हारि गये कुछ लोग
सासन बदला देस का बदलि गये रस भोग
बदलि गये रस भोग अनगिनत पाथर लगिगे
खुद भे मालामाल भाग पुरिखन के जगिगे ।
त्याग ! फंसेउ तुम कहाँ घोर कलजुग मा आयेउ
शोषण की गंगा मा गोता अफरि लगायेउ ।

होम मिनिस्ट्री ते चला, अल्लड़ पुलिस सुधार
आयोजक की नाव का बना सबल पतवार
बना सबल पतवार बढी ओतनी हैरानी
एकादसा नित होइ नित लौटइ बेइमानी
उड़ी प्रगति की हंसी नहरि दफतर मा रहि गइ
राजनीति की राह योजना गैतल बहि गइ ।

उप्पर उप्पर एकता भीतर जहर तमाम
तपसी भेसु बनाइ के करें लूट का काम
जनता का हुसियार करि कहैं चोर ते वाह
इन नेतन की चाल मा हुइहैं देस तवाह ।
का हिन्दू अउ सिक्ख सब मिलि लडिहैं भैया
स्वतंत्रता की लासि खोदि के गडिहैं भैया ।

सिया और सुन्नी लड़इ लड़इ जाति ते जाति
रोटी कुरसी जेब बदि जोरे फिरइ जमाति
जहं देखइ सदभाव कविउ मिलि आगि लगावै
छानइ बेमलि शराब भीड़ का नित भड़कवै
मठाधीश निज पंथ के बने रहइ यहि हेतु
जेतने निरखइ बनति कहूं खोदि गिरावै सेतु

उत्तर प्रदेश के जड़ मन्दिर

उत्तर प्रदेश के जड़ मन्दिर स्वारथ के मुँह का भये कौर पइठ हँइ देउता मन्दिर मा इनका ना सूजा कहुँ ठौर टुटही मठिया के चारिउ तन जो अइली फइली जगह परी बहुरँइ घूरेउ के दिन जग मा बहि तलिया की किसमति बहुरी कौनउ संडास खुला छाँड़े कोउ रहा बहाइ पनारा हइ छोटी अउ बड़ि दुइ संकन का मैदानुँइ बना सहारा हइ कुछ धनपतिया कइ दिहिनि आँखि बनिगे कमरा दुइ चारि बड़े तब बनी कमेटी कुछ असिली कुछ नकली मेम्बर गये गढ़े अपना का सदा जनाबइ वदि श्रम कीरति की मजदूरी हइ बिन पइसा कौनउ काम न हइ फिरि चन्दा की मजदूरी हइ सरपट मा बनइ देबाल लगी चौगिरदा झगड़ा होइ लाग परमारथ पूजा धरे रहे जब स्वारथ तगड़ा होइ लाग कौनउ लाठी लइ निकसि परा तब पुलिस पिआदे नेउते गे झगड़ा मंजिल अउ राह बना मन्दिर के भाजि सिंहउते गे सब कहुँइ कि तुमरे बापइ की परबन्धक आँसुन रोइ रहा बाहान देउता सबते आगे धीरजु हइ धीरजु खोइ रहा राखे गे एक पुजारी जी देखइ मा सबका गाइ लमे मन्दिर मा आपनि राजि जानि उइ करइ नित नौताइ लगे बाई झारे जन्तुर बाँधे मारण उच्चाटन करै लाग जगु जिअइ जिआये ते उनके उनके मारे ते मरै लाग काहू पर आबँइ बरम देव काहू का औघड़ दाबि रहा काहू पर खेलि रही देवी कोउ अदिन देखि नित खाकि रहा इनके फुँकतइ चिल्लाइ भजइ चँहि जौन बिआरी हवा होइ डाकदर बैद जब होंइ फैल तउ इनकी हिकमति हका होइ

कुछ ममुंइ मुला पुजारी का घर के दासउ ते अधिक नीच
ध्योपार केर जरिया मन्दिर बाह्यन की पातरि लटी घींच
जब साँझ होइ दुइ चारि जने रोगुइ मन्दिर मा जुरि आबँइ
मुलफा अफीम ठर्रा ताड़ी आपन पैसन ते पहुँचाबँइ

जब भीतर मारइ जोर नशा तउ बातन के विस्तार बढ़इ
लीला निहारि लरिका लरिकी सब भूलि पढ़ाई यहै पढ़इ
सब आपनि रौटिन मा उरखे केहिका टाइम जो देखि सकै
जो सुबुगि रही यहि चठिया मा को कहइ और को लेखि सकै

यहि बिध मन्दिर मा लौटि पौटि सरधान न बढी व्यभिचार बढ़ा
सब धरी रही पूजा अरचा परबन्ध कमेटी लड़म पढ़ा
लड़िकऊ पुजारी के जबान बनि काम भूत सिर आइ चढ़ा
मन्दिर की एक कोठरिया मा अखिरी गवा अध्याय पढ़ा

पाथर हइ देउता की मूरति मुल ओहिमा देउता राजि रहा
पहिले मानुष की मूरति हइ मूरति मा अनहद राजि रहा
अध्यातम जो सिगरा जीवन तउ मूरति पूजा लरिकाई
हइ जौल जवानी ते सुन्दर हइ सहज सबन के मन भाई

जइसे बचपन मा गिनतिन का गोलिन ते गिनव जरुरी हइ
मूरति पूजा कुछ बहै भाँति यहि मानुष की मजबूरी हइ
मन्दिर तउ मन्दिर तब लौ हइ जब लौ न केरायेसाला हइ
घत चहै जो करै दुनियाँ मा यह महजिद और शिवाला हइ

लाखन मा लनिक केराये के कभरन मा कुछ जन रहै लाग
लरि अगिर जौन कुछ बना रहइ ओहिकन निज स्वारथ दहै लाग
कलजुग मा कौचउ देर नही औज की सम्पति हइपइ मा
कुछ नेतागीरी अउ अमाति फिर कौन देर घर गइपइ मा

हँइ बेवकूफ पूजी लगाइ आपन अकान जो बनबाबँइ
हुसियार बहै जो मुक्त रहइ उत्था सालिक का गरिजाबइ
आपन बनवावा घर दइके बसि बहै केरवा लूप लख
सालिक का अइ लेपेदिअअ लखी हइ लौन बनल रहइ

बाहेर बालेन ते रगडि झगडि जब कइसेउ सब कुछ बनि पावा
तब भीतर आगी बरै लाग कोऊ न बुझावै बदि आवा
परबन्ध कमेटी के ठलुहा गाँई बाँधे बटिया पारै
अपने घर मा विजुरी बारै मन्दिर के खरचा मा डारै

कुछ झूठी कीरति हित आपन पइसा ते मन्दिर बनबाइनि
नगई पाइ के मन्दिर मा आँसुन रोये अउ भरि पाइनि
धीरे धीरे सब जगह गयी ट्रस्टी जन का कब्जा हुइगा
देउता फाटक मा बन्द भये कुलु आदसँन का सब धुइगा

हम चलेन जहाँ ते हन हुँअनई आपन पेटे मा पहुँचि गयेन
घर घाट न दोनउ पाइ सकेन घोबी कै कुत्ता अइस भयेन
हइ जह कौनउ की लागु नहीं बसि कलजुग की बलिहारी हइ
हम आँधर हन रुपिया हमार जस बाप और महतारी हइ

जेबन मा देउता डारि फिरै जइ ब्राह्मन सब ते आगे हँइ
हँइ अगर शराबी तउ आगे सबते अब यहै अभागे हँइ
सबसे स्वतंत्र सब राजा खुद जइ जमतगुरु जइ करनधार
जइ अधरम और धरम दोनऊँ जइ अपरिहार्य जई दुनिवार

जइ अपसर तउ आगे अपसर जई डाकू हँई जई नेता हँइ
जइ हँई फकीर जई मालिक हँई जइ बाह्यन विश्व विजेता हँइ
जब बिगरा हइ सब पग पग पर अँगुरी धरि कहाँ बताई हम
भगवान अजायब घर मा हँई पंडन की गाथा गाई हम ।

बिरबन के धोखे स्वारथ के धस्ती पर पुतरा ठाढ़े हँइ
भइ जेतनी इनकी काट छाँट केरा अस ओतनई बाढ़े हँइ
जिनमा विद्यालय चलैई हुअँउ धमकच्चरु हइ सब पइसा कै
सिगरा तलाउ यहि कलजुग मा हइ भैसिन कै अउ भइसा कै

यहि ते मन्दिर मा जाउ मुला ना भूलि बनौ परबन्धक तुम
नहि तौ आपनि सरधा की बदि जह खोदि रहे हो खन्दक तुम

चलँइ चप्पल विधानसभा मा धन्नि कुर्सी महरानी

दाहलसफा मा बोतलई खोलँई
फिरि सरकारी भाषा बोलँई ।

बने यहै बेभिचार के अड्डा
यँसि और की और को पड्डा ।

अपसर माल पटाइ के लावें
बंगलत मा मिलि बाँटि उड़ावें ।

कबहुँक जाइ के हाथ उठावें
कबहुँ नशा म जाइ न पावें ।

जइ जनता के प्रतिनिधि भैया
जइ भ्वाला हइ जनता गैया ।

होइ जौन मन्जूर रुपइया
गिद्धन अस ताकें छुटभइया ।

करँइ दूरि गरीबी हवा मा
धन्नि कुर्सी महरानी ।

कुरसी बसप और महतारी,
कुरसी चोर डकैत जुआरी ।

सब तिकडम की धुरी यहै है
गरदन पर की छुरी यहै है ।

यहि की खातिर सब नंगे हैं
ठेलम पेलम हुड़दंगे हैं ।

सब हुइगे पुस्तेनी नेता
मन्त्री टिकटन के विक्रेता

कुर्सी की सब होइ आड मा
देस रहइ या जाइ भाइ मा ।

जह विष ते बाढ़ि दवा मा
धन्नि कुरसी महरानी ।

बादसाहियत केर अखाड़ा
देस पढ़ि रहा वहै पहाड़ा ।

बड़ा छोटकवन का धरि खाइ
पईसा लिहे निआउ बिकाइ ।

बड़ा वहै जो जेतना जाली
साँचु कहइया केरि हलाली ।

सुरसा अस महंगाई हुइ गइ
राजनीति बपदाई हुइ गइ ।

कंकर परथर दारि मा कसके
नियम धरम सब रहि रहि मसके ।

लिफट लगाइनि धनपति हुइगे
सब विकास भाषण मा धुइगे ।

बाँटई धन कुनबा मा
धन्नि कुरसी महरानी ।

कुरसी काल भई
राजीव गान्धी की मृत्यु पर लिखित

जह कुरसी काल भई
अहिंसा फेरि हलाल भई ।

सम्प्रदाय की राजनीति मा
खैचतान मा अउ अनीति मा ।

दुसमन भाई-भाई हुइगे
स्वारथ बँधे कसाई हुइगे ।

बूचड़ खाना देस समूचा
मंत्री हुइगे लड़ी बूचा ।

केहिका केहिका नखा उतरिहो
सब बिगरा केहि भाँति सुषरिहो ।

समस्या अति विकराल भई
अहिंसा फेरि हलाल भई ।

अपराधन के चहबन्चा मा
देसु विदेसदन के गन्चा मा ।

माटी पाछे रोटी आगे
सब हुइगै बलिदान अभागे ।

मिलिगे हत्या अउ कुरबानी
गोटइ स्वारथ की मनमानी ।

मठाधीश राहन ते भटके
रोटी अउ कोटी मा अटके ।

बगुलिया दुष्ट मराल भई
 अहिंसा फेरि हलाल भई ।
 लिट्टे कहूँ, कहूँ सिवसेना
 देस भगति का किहे चबेना ।
 बात कहूँ हइ खालिस्तानी
 धात कहूँ हइ पाकिस्तानी ।
 कहूँ तीन सौ सत्तर धारा
 गवा भाड़ मा भाई चारा ।
 तिकड़म झंझट मारकाट हइ
 प्रेम नेह के मन उचाट हइ ।

सफल द्रोहिन की चाल भई
 अहिंसा फेरि हलाल भई ।

लूट मार कै राज हियाँ हइ
 नेता आतशबाज हियाँ हइ ।
 जाति जाति मा नई जाति हइ
 संसद ठुलुहन की जमाति हइ ।
 दुख ते कौन रहइ बगार मा
 कुरसी छौड़ि मचइ को हर मा ।
 पइदा हुइ कौनी माटी ते
 उग्रवाद हाँकइ साँटी ते ।

मनुजता फिरि कंगाल भई
 अहिंसा फेरि हलाल भई ।

पद पर जौन करै मतमानी
 चलाइ सूड ते उप्पर पानी ।

कौमल बेह न जुम्मेदारी
 रुपिया बाप और महतारी ।
 रक्षक भक्षक बनि के ठाढ़े
 जो उजरे उइ अउरउ गाढ़े ।
 रहइ महल मा दादागीरी
 अक्कलि रोबइ सहइ फकीरी ।

ठगी उन्नति की, ढाल भई ।
 अहिंसा फेरि हलाल भई ।

सब गावँ एकता गीत

सब गावँ एकता गीत
 धीत हिर्यां कोई नहीं ।

बड़े देस सब मिलि मिलि आवें
 मानवता की ढोल बजावें ।

भीतर-भीतर आँधर बनि के
 अस्त्र सस्त्र दिन रात बनावे ।

होइ चीन, अमरीका कोई
 खाँइ नहीं राटी अनरोई ।

मृंह मा और पेट मा औरइ
 नेह प्रेम की फसल न बौरइ ।

जो जेहि का तनिकउ धरि पाबइ
 देइ पटकना बाज न आबइ ।

नीति नियम सब किस्सा हुआ
कूटनीति के विस्सा हुआ ।

जाँइ सबइ सबके देसन मा
बाँधि बघनखा निज केसन मा ।

सब आपुस मा भयभीत
गीत हियाँ कोई नहीं ।

मंचन पर जब नेता बोलेंइ
नित समता की घुडी खोलेंइ ।

नीचे उतरें जाति विचारेंइ
साठी साँप दुअउ का मारेंइ ।

अउरउ आगे पण्डित मुल्ला
राति करावै खुल्लम खुल्ला ।

आपनि रोटी बेमलि चलावै
लिफ्ट बिठि उप्पर का आवै ।

कइसेउ मिलइ मिलइ मुल मदी
चहँइ होइ जह दुनियाँ रही ।

मछरी के निआउ हइ जग मा
गड़े शूल हँइ सूधे पग मा ।

उजरइ चहँ बसीत
नीत हियाँ कोई नहीं ।

चूल्हे चकिया के चक्कर मा
स्वारथ अनरथ की टक्कर मा ।

कविता बनि छुआइ छुन्दर
रोति काल फिरि मस्त कलंदर ।

धरमगुरु जन जन का बाँटिनि
देस एकता समता चाँटिनि ।

गायेन जस देखेन

नर ते बड़ा कुयर का मानिनि
 सम्प्रदाय का श्रेष्ठ बखानिनि ।
 रामायन पढ़ि भाई मारिनि
 लछिमन भरत दुअउ का तारिनि
 राम इमाम जुगल भे नेता
 दल दल मा फंसि गे अभिनेता ।
 बेइमानी मा आगे हाजी
 पण्डित और पादरी पाजी ।

करैइ पुरिखन की मट्टी पलौत
 भीत हियौ कोई नहीं ।

अब के किसान

जब तीन बरस लगे फेल भये भइया अघाइ कक्षा दस मा
 तव हारि गई हिम्मत उनकी अब रही पढाई ना बस मा
 संझलौखे कोइरे पर बइठे तउ ककिया ते बतुआइ चले ।
 अब करैइ किसानी जुटि हमहूँ जिउ का नभ मा दौराइ चले ।
 बोले बप्पा करि करि भरि गे ना तनिकउ उन्नत करि पाइनि
 दिन राति त्रयं अम रम्भे तउ मूल वक्खारी ना भरि पाइनि
 बेलन का बेचि लेउ टुकटर उठि अब वह मनो किसानी गइ ।
 जोतति बोउति हुइगे बेरभ मस चारि खेत मा धानी भइ ।
 खेतइ मा खौदिनि जब कुदया दुइ निगहा सीचि उखारी भइ

वनि तीनि मटा जगु राब सकी जानउ जह उन्नति भारी भइ
 यहु लरिका नवा बिभारु दिहिसि बोला अब बोरिय करबाबउ
 चौगुनी फसल कइके पडदा ललु पूर किसानी कै पाबउ ।
 अब गाँउ सरग वनिहैं यहि बिघ छपरन मा हइहैं महल ठाढ़
 खेती वनिहैं व्योपार सघन हइहैं शहरन ते गाँउ गाढ़
 करजा की फिरि दरखास एक दइ दिहिसि भाम सेवक कहियाँ
 बोले उइ बड़ी कठिनई हइ जह दुखद कर्ज कै छमछहियाँ ।
 लरिका बोला तुम सेवक ही सेवक बोला पइसा परिहैं
 बिन लिहे बी० डि० ओ० साहब जी कागड़ पर दसखत न करिहैं
 जो जोगन्ना घरा जुगाबिन ते ऊ रुपिया घर ते लइ आवा
 पइसा तउ मिलिहैं तब मिलिहैं सब घर की पूंजी दइ आवा ।
 चढ़ि गइ जमीन सब करजा मा जो गड़ा तुपा सो सब लुटिगा
 तब पाइमि इंजन दौरि धूपि जब इंजन धीरज का छुटिगा
 खुम भवा और तुरतइ बोला टाइम देखइ का घड़ी चही
 जब इंजन चलइ केराये पर दपकड़ का टाचँउ बड़ी चही ।
 भइ पहिसि फसल पडदा जबहें बौराइ गवा रुपिया देखिसि
 जानिसि दुनियाँ का भुनका अस खुद का एकइ रहीस लेखिसि
 जो चतुर समेटइ अउ ओढ़इ जब होइ पाँउ बड़ चादर ते
 अरई अउ हिकमति दुअउ थकई मुल काम परइ जब खादर ते ।
 वनि गये सूट हुइगा बाबू कपड़न मा धूरि लगाबइ को
 हइ मलिसि क्रीम जेहि देही मा ओहिमा चौरा लगबाबइ को
 जहु एक प्रवाह बहइ जीवन कहुँ रुकइ नहीं सुस्ताइ नहीं
 उन्नति कै पथ मा जहु मानुष चलिबे बदि कबहुँ अघाइ नहीं ।
 मेहनति ते जौन चौराइसि जिउ बहु करिसि किसानी भरि पावत
 हइ एक मियान म कौन भला तरवारि हियाँ दुइ भरि पावत

जब भरघर साउन जलु बरसा उमडाइ चली तलिया अघाइ
जो एकरस ना राखिसि जित का बहु अदबदाइ हइ लल्लबाइ ।

जह गाढि तपस्या तपसी की ना हँसी खेल जानउ यहिका
खपडी पर गाँज मौसमन की अति कठिन पंथु मानउ यहिका
ढेबरी को जौन उजेरु रहइ बिजुरी पइबे मा गवा चला
सीढी के बिना अकाम छुयेन मेहनति बिन बिरवा कीम फला ।

हइ फूस तपाई अस करजा यहिमा कुछ लाउ न लच्छन हइ
हइ गरम तवा की बूँद एक यहि ते कौ भवा अकच्छ न हइ
किस्तइ जब सत्रइ पछेलि गयीं दिन पर दिन बढ़ति रहा करजा
तब भरभराइ कै बढा सूतु निकसे जनु भुँइ ते दैउगरजा ।

खेती के फिरि नीलामी भइ ढोलकउ गयी अउ खाल गई
लम्बी धोती मोटर साइकिल अति जीवन के जंजाल भई
खेती मेहनति की महतारी खेती ना खाला को धरु हइ
माटी का करम पसीना हइ जो हर सवाल के उत्तर हइ ।

पहिचानी गई

एकहि बार उडेलि के सागर
 मानहु भुंइ सिगरी रंगि डामी ।
 मारि गुलाल अकाम भग
 अरु बादर श्याम करी थिचकारो ।
 बूझत है होरिहान ते ग्वाल
 कहाँ निज त्राम की आस बिचारी ।
 आखिन कोरन फागुन खेळत
 भीतर खेलत कृष्ण बिहारी ॥

बीचिन बीचिन ते लपटाग
 बिछाय चिनौनि के चादर कोगे ।
 देखि रहे झुकि के सब पादप
 कूलन बाँहन मा जनु गोरी ।
 वोलि रहीं चिरिया जल के
 सब लाज गुमान के बन्धन तोरी ।
 गोप बने जल तारक मस्त
 निशाकर मोहन खेलत होरी ॥

घर ते निकसी जो बखोहा नई
 लड नूपुर हाव लजानी भई ।
 भई अग की हीली कमान मनी
 रगी होरी के रंग जवानी नई ।
 उरसे सत्र बार झुकी पलके
 मिलि व्यंग वरे नंदरानी कई ।
 दइ तानी जेजानी कहँ हँमि के
 पहिचानी गयी पहिचानी गयी ॥

एक बर हमरे हिय मा
 लीनि बोलि के कौन मनेहु जतइहै ।
 देखिहै कौन करेयो निछोड़ि कं
 का कबो लोटि कं जीवन अइहै ।
 कौनी दसा बितिहै सजना
 अज भागिन राति हमें इति जइहै ।
 मोइहै परी पिचकारी कहूँ
 मरो फागन दूरि खड़ी पछितइहै ॥

दीहे

कुला बाँवर ओर तुम मूलि न देखउ खोरि
 खिरि करे भौकंद तुरत या फिरि लोई भँभोरि ।
 होति भोरहरे मण्डपी बादर अमर देखाइ
 दुपहर सगु ओंधो रहइ और बरसि के जाइ ।
 काटेन गिन गिन के विक्रम होरी पहुँची आय
 भौजी मइके चलि भर्षी यह दुख कहाँ समाय ।
 लरिका लरिको बैस बड़ि जो बिआह हुइ जाइ
 रूप रहइ अलमट्ट परि रहि रहि प्रेम छछाइ ।
 होइ नखरही भामिनी काहेर होइ बजार
 तापर पडमा गोठ जो कबहुँ न होइ उबार ।
 दरवाजे ते निकरि जो खेतो सकल देखाइ
 बख्तारी अहनी रहइ छिन छिन मनु हरिआइ ।
 होइ चौतंग और जो हाँआली के बास
 चौकीना अंगन बड़ा घर बग सब सुगास ।
 सम वय केरो मित्रता अउ समता के बैर
 शुभ बिआह मज भाउ के सदा रखावैद घर ।

होइ चातरा पर बघी ओहक स्यामा गाइ
लरिकन का लइक नहीं कषहुं वैद घर जाइ ।
तुलसी कै जंगल जहाँ, नहीं चिलम की वानि
खाँसी खुरा के बिना सोबउ लम्बी तानि ।
होइ नखरहां कामिनी और जो तगढी होय
उप्पर ते गुस्मैल जो तउ दुग राखी गोय ।
वड़ी कठिनता से मिलइ यहि जग मा शुभ जोग
रूप मिलइ तउ घर नहीं जो घर रूप न भोग ।

हुइ जाइ पूत डिपटी तुम्हार

बाहेर फकीर रिरिआइ ठाढ़ हुइ जाइ पूत डिपटी तुम्हार
भीतर भूँखेन मा लरिका का हुइ आवा भूखजरु या अजार
दूधन पूतन ते फरी नित्त यू काडिसि आसिवाहु नवा
तव लौ फेसवा ष्टी लेहुउ अस कहिसि मनौ दइ घाउ भवा ।
वप्पा काने पर घरनि हाथ जेहिमा ना लरिका ना सुनि घाव
बाँसुरी गरीबी की फिर ते ना अब उकसेबी छुनि प्रावे
चिल्लाइ परा तव लौ लरिका रोटी रोटी रोटी सेटी
महतारी बोली काल्हि मिली पुतुआ चुपाउ मोट झोटी ।
हम सोची का बनिहै लरिका जब रोटिन बिना बेराम परा
कब अइहै जोगरा मा वाली कब भटिहै कौनउ दुख अंधरा
यहु आसिरबाहु हमरे वदि बावा मन्थल कं पानी हइ
हइ मोतउ बाबा मोल गिगा जिन्दगी तेल कं पानी हइ ।
चूल्हे मा आगि न दइ पायेन दइ दीस वीति गे हइ पहार
वावा तुमका हथ का देई पायेन नः मागे लगु उभार
यू हइ बोमासि कः नहिना हइ कहुं मजूरी लायि नही
जलमंड के बहिले सोइ गई जानी अब लौ हइ भागि नही ।

तुम पुरिखा हउ, अब बड भगत प्रभु त यतनी अरदास करउ
यक पहरा जुरइ पिसान हमइ अस पतझर मा मधुमास भरउ
हन बाह्यब तेहि की बदि मलानि अब लौ ना कियेन मजूरी हम
जूठे पिलास अब रहेन घोइ पायेन ना तहँ सवूरी हम

बडकवा मजूरी करिबे वदि चौगहे पर नित होइ ठाढ
मुल आबइ ना कौनउ परोस तइ मजदूरन की भीर बाढ
यकु तौ जो जानइ यू बाह्यान दूरिय ते वाईकाट करइ
ई पंडिन बड़ निकम्मा हंड कहिके दिन बारा बाट करइ

हंसि के टारंड ई पंडित जी दम नकझारइ ई पंडित जी
संधी मारंड ई पंडित जी सब दुतकारंड ई पंडित जी
अगु जी के बदला खूब मनौ कलजुग मा यू भगवान लिहिसि
सबके सबदन के वापन ते कसि बाह्यन पर मंधान किहिसि

दुनिया इनका विद्वान कहइ मरकार कहइ शोषक अमीर
हमका अब जुरइ न रोटी मुल हन बाबा तुमते बड़ फकीर
सल्लाह देउ तुमहें हमका का कहि लरिका का बेलमोई
जब घर मा आटा के लाले तउ कहाँ दवाई हम पाई

मरमिया पढति जइ विद्यालय को पढ़ि इनमा छिपटी बनिहै
ना जुरिहइ ट्यूशन बदि पइसा ना जानु चांदनी बनि तनिहै
हुइहै अच्छर ते भेंट नहीं चलिहै पसुरी सब ढकर ढकर
बदि मीरा के जो तडपडाइ तुमरे न कहे मिलिहै शक्कर

कटिहै कन्ना अब कनकौआ कुछ दिन कहि कहि के डेरबायेन
भूखेन को सोइ सका जग का अग्रहाग भयेन अउ पछितायेन
मसिलवा खैचि रक्सा कैसेउ पेटन के गडहा पाटि रहा
हम चारि बरन मा ऊंचे इन यू लिहे बडपन चाटि रहा

आसु बनि के बाहेर हुइगे अब लौटि सकी जहू ताब न हइ
रुखा मूखा बसि भरइ पेटु छिपटी बनिबे को खवाब न हइ
लरिकनिघा दुखिया देखि रही रक्षा बन्धन बदि हुअं रहा
भई अनुमारे बडठ हिया दुइ दुइ पइमन बदि भरइ आह

समुरे के ताना उप्पर ने दुखिया लठिन की खाइ माह
कइसे हम बिदा कराइ सकी यह आँसुन को बिद तोरि ताह
बिटिया गरीब घर न जलमइ यह आशिर्वाद देउ बाबा
जिअतइ आँसुन के कफन मा ना बनइ जिन्दगी पछसाबा ।

मानइ ना जानि भेद तनिकउ जह निर्धनता स्वच्छन्द रहइ
डाहइ मयका, यहि बदि कौनउ धरती की राह न बन्द रहइ
कौनउ गरीब की जाति नहीं यह बे मकान अउ बे जुवान
हइ घृणा दलिहर बाँटि रही अकृताइ रहा भारत महान ।

संसद मा बाह्यन हइ ओपक बाह्यन समाज को नामि किहिसि
बाह्यन बोरिसि ता'रसि बाह्यन, बाह्यन अपने का लासि किहिसि
यू राजनीति का दाँउ पेंच यह है कुरसी की बलिहारी
यू छाड रहा बाह्यन धटिया बाबा से बोली महतारी ।

मुरली वाले का यह बाह्यन भगवान बनाइसि युज गाइसि
ठाकुर जी का करि विश्वनाथ घर घर कै उर मा बैठाइसि
मुल जह कलजुग के बलिहारी हइ खाइ रहा सबकी मारी
जो संग जनम से मौत तलकु ओहिका नफरत के अंधारी ।

कमजोर अंग की मददि करी मुल सखल पुष्ट का काटउ ना
ना और करउ गहिरी खाई हे करनधार जो पाटउ ता
जव ली समान सब ना हइहैं भारत के सावधान गहियाँ
तव ली जह रहिहैं जाति पानि अउ आरक्षण के प्रमछहियाँ ।

हिन्दी दिल हइ अउ गुरदा हइ

जनतंत्र व्याप्त का ध्वजा हइ जो नहीं अपनि हिन्दी भाषा
बिन जर के कौन भला बिन्दा जो बीज नहीं तउ का आसा
भारत के प्रातन की बानी हिन्दी जन मन के कल्याणी
हइ यहै सभ्यता अउ संस्कृति यह धरती के चूतर धानी
यहिमा कबीर की बानी हइ यह है अभेद का दरवाजा
हइ जोय्य देस की भाषा बदि सब सीख सकइ रानी राजा
बलु कइके ना रोकउ यहिका भाषा हइ गंगा के घारा
सब बिधि पूरे अच्छर यहि के यह गौरव हइ यह उजियारा ।

हिंदु चही देस का तउ सीखउ जिउ चही देश का तउ सीखउ
जो ज्ञान चहति हौ तौ सीखउ विज्ञान चहति हौ तौ सीखउ
निज स्वाभिमान बदि के सीखउ, सीखउ जेहिमा अधिकार मिलइ
संस्कृति की बड़ी लरिकिनी हइ सीखउ जेहिमा भिनसार मिलइ ।

तुलसी बाबा की रामइनि यहिका घर घर पहुँचाउति हइ
यह देव नदी असा पीड़िन से पीड़िन तक उतरति आउति हइ
अंगरेजो वहु न बनि पइहँ हइ निन्त कौन मेहमान रहा
जो बोलि न पायेन निज भाषा तौ कौन देस का मान रहा ।

हिन्दी के पाछे व्यक्ति नहीं ताके सम्पूरन देस खड़ा
यहिका बोले ते बड़ा व्यक्ति यहिका बोले ते देस बड़ा
जो चाहि रहे हौ देस भक्ति तौ हिन्दी भाषा मा ब्वालउ
जो चाहि रहे अभिव्यक्ति सरल तौ हिन्दी भाषा मा ब्वालउ ।

जो चाहि रहे हौ बनइ देस तौ हिन्दी भाषा मा ब्वालउ
जो चाहि रहे हौ सजइ देस तौ हिन्दी भाषा मा ब्वालउ
आपन भावन की ऊँचाई जो चाहि रहे हिन्दी ब्वालउ
सम्पूर्ण विश्व के अगुआइ जो चाहि रहे हिन्दी ब्वालउ ।

रसखान सूर के गहराई जो चाहति हो हिन्दी बवालउ
जो चहौ प्रकृति की अमरा हिन्दी बवालउ हिन्दी बवालउ
जो धम्म चहौ हिन्दी बवालउ जो भगति चहौ हिन्दी बवालउ
भारत की भूख मिटावइ का मलमति चाही हिन्दी बवालउ ।

सन्तन की मीची हिन्दी हइ हिन्दी भाषे के बिन्दी हइ
ना बंगाली ना राजाबी ना गुजराती ना सिन्धी हइ
भारत के फूल पिराइ सकइ यहु दिइ हिन्दी का डोरा हइ
हिन्दी के बिना अधूरा सब जीवन के कामद कोरा हइ ।

जो लिखा जाय बहु पढ़ा जाय हिन्दी के अजब कहानी हइ
आपन मोता का पाटि कौन यहि जन मा पाइसि पाबी हइ
हँइ कोसि रहे कुछ फैसन मा जो नहीं घाट के घर के हँइ
जइ अधिकचरे लुजगुन महान ना दफ्तर के ना हर के हँइ ।

हिन्दी बिचार के बिरवा का बौडाइ रही दइ दइ पानी
लिपि यहि की सबसे नीकी हइ भौखिनि हँइ ज्ञानी विज्ञानी
अपने पावन पर ठाढ़ रहौ यहि के वदि साधन हिन्दी हइ
हर भेद भाव का गाड़इ वदि मन का आराधन हिन्दी हइ ।

कौनउ भाषा ते द्वेष नहीं सम्मान जोग्य हर भाषा हइ
मुल हिन्दी हइ विसवास अटल पूरे भारत के आसा हइ
अब राष्ट्र-एकता के वितान हिन्दी के बिना न तनि पैइहै
भारत का भौन समुन्नत बहु हिन्दी के बिना न बनि पइहै ।

हइ भौख नहीं, हइ नहज भुख हिन्दी दिल हइ अउ गुरदा हइ
हिन्दी हमारि हइ भाँस सबल हिन्दी बिन भारत मुरदा हइ ।

दोहे

आवति लछिमी देखि के भूलि न फरिका देउ ।
 औसर मा चूकउ नहीं व्यवहारिक मत लेउ ।
 होइ दुसमनी जौन ते लरिका देउ बिगारि ।
 सन्तति असर कुलच्छमो कहा करइ तरवारि ।
 जाति धरम को भेद जो राज सभा मा होय ।
 जानउ हइ अवनति रही आपन पाँउ गड़ोय ।
 जिगंजी खटिया और घर, वस्तु मिलै ना ठोय ।
 होय पेट कं रोग नित, आयु न पूरो होय ।
 जेहि दिन ते दुइ चन्द्रमा या लउ कटी देखाइ ।
 होय छीन जाहार जो मौत लखी नियराइ ।
 जौन कहउ खुलि के कहउ संकट का न डेराउ ।
 धार कवितइ मा बड़ी मुल न रहइ बेभाउ ।
 छिन मा सब कुछ संचरइ छिन मा सब कुछ जाइ ।
 नर अतिसय निरुपाय मुल, सब कुछ रहा बनाइ ।
 जातइ खन हंति कं मिलाइ अउ पाछे मुमकाय ।
 ककर मा कब ते रहा, जाचउ जहूँ मिलाय ।
 पुरस्कार सम्मान का धरउ ताख मा गोय ।
 पहुँच राज दरबार मा दिहसि कवितइ रोय ।
 घटइ जगत व्योहार जो घटइ नित आहार ।
 मान घटइ निज मेह मा मनी मरन हइ द्वार ।
 बीडी कं टुकड़ा बचै गिरा गिराबा गेह ।
 कुछ कागद अउ लेखनी सायर नहि सन्देह ।
 गरब नसावइ ज्ञान का स्वारथ खोवइ मान ।
 लछिमी तेहिते दूरि नित जो आचस की खान ।

आवउ मिलि जुलि निरमान करी ।

हुइयेन स्वतत्र कुछ कइ डारो
दयाखइ जेहिया दुनिया सारी ।
भरि जाई अन्न ते बक्खारी
ना हंसइ बिदेसी दइ तारो ।
नित नूतन अनुसन्धान करी
आवउ मिल जुलि निरमान करी ।

जन जन का पूर निआउ मिलइ
डंठल डंठल मा कली खिसइ ।
ना घुसइ भेदु अब समता मा
सब बढँइ अधिकतम क्षमता मा ।
पथु प्रगति क्यार आसान करी
आवउ मिलि जुलि निरमान करी ।

आपनि जनसंख्या का रौकी
जो गलत करइ लेहिका टोंकी ।
यहि जातिबाद कै सागर का
बनि कै अगस्त छिन मा सोकी ।
दानव बदली इन्सान करी
आवउ मिल जुलि निरमान करी ।

जगु सुखी रहइ हय सुखी रहँइ
श्रम कै देउता ना दुखी रहँइ ।
जन जन मा पनपै देस भुषति
हइ नित्त एकता मा भलपति ।
अभिमान का बरदान करी
आवउ मिलि जुलि निरमान करी ।

दइजा हइजा ना धरइ अब
 दुसमन ना आँखि नरंरइ अब ।
 आरँइ रिसवति कै लच्छन सब
 हिंसा खुलि करइ अकच्छ न अब ।

ना करजा खाइ गुमान करो
 आबउ मिलि जुलि निरमान करी ।

वहै देसु हम पावै

सहस बार जो जलमंड भुंइ पर वहै देसु हम पावै
 नित नित होई देबारी होरी सह्र गाँउ मिलि गावै ।

सम्प्रदाय ना जहाँ बहावै व्यर्थ रकत कै धारा
 दुखी गरीब पाइ के हुलसे महलन केर सहारा ।
 जरे प्रेम का दीपक जल थल सब का मिलइ उतारा
 फन फन पर नाचँइ नदनन्दन उमगै जिया हमारो
 जहाँ घृणा अउ द्वेष कपट छल ना मिलि पैग बढावै
 जहाँ सन्त रेदास भगति मा डपली अपनि बजावै ।

श्रम का कातँइ चरखा सब मिलि फिरि बरगद की छईया
 लेई दूध की नदी हिलोरँइ घर घर लेई बलईया ।
 बूढे अनुभव करँइ दुआरे लरिकन मा लरिकइयाँ
 साधू सन्त मुकुति क परबत अनुदिन चढँइयाँ ।
 छही रितू बनि सुखद सुहावन जहाँ प्रभाउ देखावै
 जहाँ प्रगति का झंडा हिन्दू मुसलिम सिक्ख उठावै ।

खाँड़ बिदुर घर सागु कन्हैया भरि आँखन मा पानी
जूठे बेर राम आरोगँइ जहाँ कर्ण से दानी ।
होँइ न रावन जइसे जेहि थल अति कामी विज्ञानी
हँसि हँसि खाँड़ घास की रोटी प्रिय प्रताप से मानी ।

अफसर नेता सेवक बनि कै सुख सम्पदा लुटावैं
आँगन आँगन तुलसी पूजा मइया सगुन मनावैं ।

ऊँच नीच को जहाँ देबाले कबहुँ न माथा फोरँइ
बगुला मन न अबोली मछरी सपनेउ मा टकटोरँइ ।
बगियन के लपट् डंडा मा जंगल टाँग न जोरँइ
जहाँ न खपरे के दुइ पइसा लरिका पुरिखा बोरँइ ।

बहुअन का ना जहाँ लोभ के राकस निन्न जरावैं
थपको दइ दइ जहाँ सबारे बछरा कृषक हरावैं ।

सहस बार जो जलमँइ भुँइ पर
वहै देसु हम पावैं ।

दोहे

भजति भजति यहि जगत मा, मन के पाँइ पिगँइ
प्रेम बटोही राम घर तव कहुँ आइ तिराँइ ।
धन की इच्छा ते बड़ी जस के इच्छा होय
इन दोनउ ते जो बचै सुखी जगत मा सोय ।
रहइ प्रेम सद्भाउ जो, रूखा सूखा खाय
मूरख छाड़ै गेह अस, महलु बिआहन जाय ।
उठि उठि मालिक द्वार ते, देखउ भीतर जाति
भूलि बिआहुउ ना सुता, कुसल दिवस ना राति ।
द्वाराकउ ब्वालउ भूलि मत, चलउ राति मा राह
निदा दीद बिहाइ के, मानुष साहंसाह ।
जड छिन छिन कुतरक करइ, बनि अक्कल की खानि
ज्ञानि बदि ब्वालइ सदा मुल अवसर पहिचानि ।
साँचे तपसी फूल हँइ, तोरि न तोरउ ध्यान
रहति प्रदर्शन के सदा, दर्शन धुआँ समान ।

भूतनाथ का मेला

साउन का महिना और परा आखिरी जौन दिन सोमवार
रितु बरखा की परि रही सुखद हइ उप्पर ते झीनी फुहार ।
गोला का मेला भूतनाथ बम बम भोले गूंजा तिनाद
फटि परी भीर चोगिरदा ते भूली पीरा विसरा विषाद ॥

गगा जल की काँउरि लादे काँधे पर झोरा धरे भये
नगे पाँयेन लमकति आवँइ उमगनि हीसनि मा भरे भये ।
जेहि वार दिष्टि डारउ उंघी बसि मूड़इ मूड़ देखाइ परँइ
फतुही पहिदे, लुंगी बाँधे हुइ झुंडन मा समुहाइ परँइ ॥

पटिया पारे कुछ मेहरारू पाछे मनइनि के आइ रही
कौनउ लहडुन पर हँइ बइठी मंगल अउ भजन सुनाइ रही ।
कोउ लिहे कबुत्तर पिजरा मा हइ आइ रहा लड़बावै का
मझिली भौजी के संग चला कोउ हइ चुरिया पहिरावै का ॥

कोउ लिहे जलेबी खाइ रहां कोउ हइ बीड़ो सुलगाइ रहा
कोउ हइ जवान तउ घक्का दइ मौजन मा आगे जाइ रहा ।
सूसर सिलबट्टा अउ नपिया खुरपा हंसिया कोउ बेचि रहा
कोउ होमगांट की खाइ मार, हइ गिरहँ काटि के रेछि रहा ॥

कोउ लिहे पसाही के चाउर काजर ओंभे हइ अँखिन मा
कोउ सेतुआ साने बइठा कहुं गिन्ताइ रहा हइ माखिन मा ।
कइ रहा छोड़उती हइ कौनउ पंचाईति की जोरे जमाति
कौनउ संजोग कराइ रहा, यह भूतनाथ के करामाति ॥

पूरा वह फूमन त पत्रिगा हइ मूतनाथ का कुआँ जो
 सरधा अउ केतनी भगति बड़ी यहि अचरज का अव कहै कौन
 सबकर बाली बरको बिकाइ रचंउ खोजा का नाम नही
 कोउ बेचि रहा कतरे आलू हइ हाथन का आगम नही
 सकरीन ब्यार सरबनु कौनउ हइ ठाढ़े ठाढ़े खंचि रहा
 कौनउ लरिकन पर जलबलाइ पाछे ते आग गंचि रहा
 बनुआइ रहा कौनउ आपन दुख दर्द और खेनी बारी
 यह नई रोशनी कै किरिला बूढ़े बिचार की लाचारी
 कोउ पान खाइ के फक्क फक्क बीड़ी मा दमै लगाइ रहा
 कोउ बइठा अपनि जमान लिहे चिलमन त लप उठाइ रहा
 कोउ लाठी लइके गुलादार चुचुआति तेलु करिया-करिया
 चिकनाइ चला अँइछे नजरा जस तवा बना बिउ की धरिया
 जो लावा चूनी भूसी सगु संझलौंछे तलक बिकाइ गवा
 जो रहँइ साल भरि के भूले मिलि लिहे प्रेम अधिकाइ गवा ।
 जो पाइसि जौन तेलु खोसिसि, मुल सब जलेबी डाँइ बिकाइ
 कोउ लिहे नामपाती आवा शिउ भोले का कुम्हड़ा चढाइ ॥
 कोउ जोरे भीर नचाइ रहा बन्दर आपन डमरू बजाइ
 कोउ बाजीगर देखाइ रहा, हइ लरिका का नम मा उड़ाइ ।
 ठौरइ जोशो पत्तरा लिहे सब भूत भविष्य बताइ रहे
 कोउ रोबँइ साधुन ते ठाढ़े जिनका हँइ बरम सताइ रहे ॥
 पहिदे बसि एकु घोटन्ना हँइ करिया-करिया नंगे-नंगे
 हाथन मा जीशी लिहे चलँइ मिलि बोलि रहे शिउ हरि गंगे ।
 कोउ छूटि टिराली ते गइ जो मेहरारू आँसू ढारि रही
 अज्ञानु सकल हइ बक्कि झक्कि घर बालेन केरि उधारि रही ॥

सब मनहन की लतगोंदनि ते मडकन का पानी गवा सूखि
कोउ कहइ कि भइया भीर बहुत अबहूँ लगि पसुरी रहीं दूखि ।
कोउ ठाढ़ जोरि के हाथ कहई सब दिन याराना चलति रहइ
यहु प्रेम केर जो दिया सुघर जुग जुग लौ बावा जलति रहइ ॥

घबका मुक्की करि घूसि जाइ हू-हू करि झॉकै कुआँ कोउ
लिखि दिहिस नाउं जो मठिया पर हइ भागिमान अति भवा सोउ ।
गाडी मा भरिगे भूसा अम छति पर तिलु भरि हइ साँक नहीं
मेला जवार का महाकुभ परि पइहै यहिमा फाँक नहीं ॥

यहु भूतनाथ का मेला हइ यहिका कुछ अजब झमेला हइ
हइ भीड़ भाड़ धमकच्चर हइ सब कुछ हइ रेलम पेला हइ ।



वहै देसु हम पावैं

सप्रदाय न जहाँ बहावै व्यर्थ रक्त के घारा
दुखी गरीब पाइ कै हुलसै महलन केर सहारा ।
दिया प्रम कै ज्योति जरावै सबका मिलै उतारा
फन फन पर नाचै नंद नन्दन उमगै जिया हमारा ॥
जहाँ घृणा अउ द्वेष कपट छल ना अब पैग बढावैं
जहाँ सन्त रविदास भगति मा ढपली अपनि बजावैं ॥

श्रम का कातैं चरखा सब मिलि फिर बरगद की छँइयाँ
लेई दूध को नदी हिलोरै घर-घर लेई बलैयाँ ।
बूढे अनुभव करै दुआरे लरिकन मा लरिकइयाँ
साधू सन्त मुकुति कै परबत अनुदिन चढै चढइयाँ ॥
छहौं रितू बनि सुखद सुहावन जहाँ प्रभाउ देखावैं
जहाँ प्रगति का झंडा हिन्दू मुसलिम सिक्ख उठावैं ॥

खाँड़ बिदुर पर धाम कम्बैवा ज न आँखन मा पानी
 कुठ बेर राम आगोरोट जहाँ वर्षे न दानी ।
 जहाँ न राकम राखन जइसे अति कामो बिजातो
 जलु रे देस जहाँ पर राखे राणा जइसे मानी ॥

अपनर नेता मेवक बनि के मुन सम्पदा लुटावे
 आँगन आँगन तुलसी पूजा सहया सगुन मनावे ॥

ऊँच नीच के जहाँ देवालय जब न माया फोरेंड
 बगुला भगत न अब मकरिन का सपनेउ मा टकटोरेंड ।
 बगियन के लपट उँडा मा जंगल टाँग न जोरेंड
 जहाँ न खपरे के दुइ पडस्य लरिका पुरिखा बोरेंड ॥

बहुअन का ना जहाँ लोभ के राकम नित्त जरावे
 जहाँ नेह ते होति सवारे बछरा कुपक हरावे ।
 सहस बार जो जलमैड भुँड पर वही देस हम पावे ।

